COP प्रकाशन

अनिक प्लैनेट

दिसम्बर 2016

थ्रिल हॉरर सस्पेंस विशेषांक

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

https://ComicsJunction.Stck.Me

cover art by Nishant Maurya

लेख

कहानियां

कवितायें

अतिरिक्त

चित्रकथा

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

सम्पादकीय

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

https://ComicsJunction.Stck.Me

नमस्कार दोस्तों ,अनिक प्लैनेट में आपका फिर से स्वागत है। ये हमारा दूसरा संस्करण है..जो की "थ्रिलर ,हॉरर,सस्पेंस " पर आधारित है . पिछले संस्करण के संदर्भ में हमें काफ़ी बहुमूल्य सुझाव और रिव्यु ,प्राप्त हुए जिसको ध्यान में रखा गया है..और आपको एक संपूर्ण मनोरंजक पत्रिका प्रदान कराने की कोशिश की गयी है... पिछले अंक में कुछ पाठकों ने मांग की थी , कहानियों और लेखों के साथ साथ...कुछ मनोरंजक जानकारी जो की कॉमिक्स और क्रिएटिविटी से जुडी हो वो भी प्रदान की जाये और ,लेखको के बारे में भी थोड़ी इंफो दी जाये... जिसका हमने ध्यान रखा है..और साथ ही साथ इस बार हमने एक नया कॉलम " किड्स कार्नर" के नाम से शुरू किया है जहाँ आपको कम उम्र के बच्चो की क्रिएटिविटी का लुत्फ़ मिलेगा..आशा है आप आगे भी हमें ऐसे ही अपने बहुमूल्य सुझाव प्रदान करते रहेंगे...और हमें प्रोत्साहित करते रहेंगे .....तो ज्यादा समय न बर्बाद करते हुए आगे बढ़िए और घूम के आईये पुरे अनिक प्लैनेट पर वापसी में हमें अपने सुझावों से जरूर वाकिफ करवाईयेगा.. .ताकि हम उचित सुधार कर सकें...और आपके मनोरंजन में और वृद्धि कर सकें...!!!

धन्यवाद

अभिराज ठाकुर

तूफान

मनोज कॉमिक्स

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

https://ComicsJunction.Stck.Me

पात्र परिचय • राम चौहान

तूफान का जन्म – 'मनोज कॉमिक्स के बेहतरीन किरदार तूफ़ान ने कॉमिक्स जगत में पर्दापण किया बिछुडंक कॉमिक्स से ।'
तूफ़ान का असली नाम अजय है । २२ साल का नवजवान तूफ़ान अपराधियों का काल है।
अजय के पिता एक रिपोर्टर थे जो की आतंकवादियों द्वारा मार दिये गए। तब एक घटना के दौरान प्रो भास्कर ने उसे तूफान बनाया। तूफान बनने के दौरान उसे शॉक और कोल्ड परीक्षण से गुजरना पड़ा।तब उसे एक कैमिकल पीकर गामा रेडियेशन से गुजरना पड़ा। जिससे उसे बेशुमार शक्ति मिली।'
'इस तरह तूफान का जन्म हुआ।'

तूफान के हथियार – 'उसकी ड्रेस की बेल्ट भी अद्भुत है। लाल बटन ऐ उसमें से जहरीली व घातक पिन निकलती हैं जो गैंडे की खाल में भी धंस सकती हैं। पीले बटन से वीटा एक्स किरणे निकलती हैं जो ३ फुट मोटे लोहे की चादर को भी पिघला सकती है। इसके आलावा उसकी स्पेशल बाइक में बहुत से फ़ीचर हैं। वह एक कंप्यूटराइज्ड बाइक है । Hi Fi breaks gps के साथ जेट इंजिन है। तूफ़ान की बाइक हवा में भी उड़ सकती है। तूफ़ान की बाइक उसकी क्राइम फाइटिंग में बड़ा सहयोग देती थी।' यह bike हवा में भी उड़ सकती है। इसके कीबोर्ड फंक्शन में है यह सिस्टम। जिससे उसके पंख निकल आते हैं और जेट स्पीड के कारन वह उड़ सकती है । इसके आलावा बाइक में राकेट लांचर और मिसाइल फिट हैं।'

तूफान के साथी– 'तूफ़ान के कई दोस्त भी जिसने क्राइम फाइटिंग में उसका साथ निभाया है । जैसे इंद्र, राम–रहीम और Krookbond... और भी कई बेहतरीन साथियो ने उसका साथ निभाया।'
शायद कॉमिक्स जगत में तूफ़ान ही १ ऐसा किरदार है जो अपनी अपराध उन्मूलन के सफर में मारा गया ।'
बाद में तूफ़ान की जगह ली अजय के ही घनिष्ट मित्र विकास ने जो एक वैज्ञानिक ही ।'
'१. कमिश्नर सिन्हा–कमिश्नर सिन्हा ने ही इस खुफ़िया एक्सपेरिमेंट तूफ़ान के लिए अजय का चुनाव किया। वह अजय को अपने बेटे जैसा मानता है और उसने अजय को इंस्पेक्टर की पोस्ट भी दी।'
'२. प्रोफेसर भास्कर–तूफ़ान के निर्माणकर्ता'
'३–अनीता–अजय उर्फ़ तूफ़ान की पत्नी'
'४–मोंटू–अजय का बेटा'
'५–विकास–अजय का दोस्त/दूसरा तूफान

तूफान की कहानी:– 'विकास एक प्रतिभाशाली वैज्ञानिक है और उसने अपने ऑफिस के निचे ही स्टार लैब बना रखी है जिसमें वह अपना यान रखता है और एक्सपेरिमेंट भी करता है। तूफान की मौत कॉमिस् के अनुसार विकास एक नई ईजाद करता है जिसका नाम है ई.टी। इस एक्सपेरिमेंट से वह एक

बहुत बड़े एरिया को पलक झपकते ही रेत के कणों में बदल सकता है। इस दौरान उसका अपहरण हो जाता है और ब्लैक मास्क (असल में विकास का पिता) उसका अपहरण कर रेड आइलैंड पर ले आता है और ई.टी.सिस्टम के लिए उसे बाधित करता है। रोबो गैंग के पीछे लगे ट्रांस्मिटर से तूफान उनक पीछा करता हुआ रेड आइलैंड पहुँचता है और उसे कदम कदम पर खतरों का सामना करना पड़ता है। इस दौरान एक अजनबी इसकी मदद करता है। वह अजनबी अजय की पत्नी थी।'

'आखिरकार तूफान उनके चंगुल में फंस जाता है और कैद कर लिया जाता है। तूफान की हैमर मास्टर (एक रोबॉट) से जान बचाने के लिए अनीता विकास की खोजती हुई आती है जो इ टी फॉर्मूले से एक रोबोट तैयार कर रहा था। अनीता घायल हो जातीहै और विकास को पता चल जाता है कि वह अनीता है। अनीता विकास से तूफान उर्फ़ अजय की मदद करने का वादा लेती है। विकास कहता है कि वह अजय को अपने इ टी रोबोट की मदद से बचा सकता है बशर्ते उसे एक दिमाग मिल जाये। अनीता को वह रोबॉट में अपना मस्तिष्क डालने का आग्रह करता है पर अनीता अपना दिमाग देने की कसम दे देती है उसे। अनीता के दिमाग से कंप्यूटरर रोबॉट ंबजपअंजम हो जाता है। रोबॉट की मदद से वह तूफान को हैमर मास्टर से बचा लेता है।' 'इधर ब्लैक मास्क अपनी नाकामयाबी से बौखलाकर तूफान पर घातक हमला करता है पर विकास अजय उर्फ़ तूफान को बचा लेता है। ब्लैक मास्क की पोल खुल जाती है और विकास उसे अपने पिता उर्फ़ ब्लैक मास्क को ख़त्म करने को कहता है। ब्लैक मास्क को ख़त्म करते करते अजय खुद भी गंभीर रूप से घायल हो जाता है और क्रोद्धित ब्लैक मास्क ई टी रोबोट पर भी हमला करता है। ई टी फ़ॉर्मूला अनियंत्रित हो जाता है और फटने की कगार पर पहुँचता है। इधर अजय विकास को कसम देता है कि वह तूफान का किस्सा खत्म नहीं होने देगा । विकास वादा करता है। जल्द ही पूरा आइलैंड तबाह ही जाता है पर विकास बच जाता है। और आया तूफान कॉमिक्स में तूफान के रूप में नजर आता है। उसका यान एक बग (खटमल) के आकार का है जो फायर प्रूफ बुलेट प्रूफ है।'

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

डूम प्लाटून रिटर्न्स

कहानी • मोहित शर्मा ज़हन

'इस प्रयोग में कुछ genres मिक्स की हैं और पूरी कोशिश है कि इस प्रयोग से कहानी की दिशा और दशा पर असर ना पड़े।

सन् १९४७ में रूपनगर के पास जंगलों एवम समुद्र से सटे तटवर्ती इलाके मे दो बड़े स्थानीय कबीलों तरजाक और रीमाली ने ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह के कारण वहाँ से गुजरने वाले जहाज़ और आस–पास के बंदरगाहों के व्यापार पर असर पड़ने लगा। शांत कबीलों के अप्रत्याशित विद्रोह के दमन के लिए कर्नल मार्क डिकोस्टा के नेतृत्व मे ७१ लोगो की 'डूम प्लाटून' को भेजा गया। उनका लक्ष्य था हालात को सामान्य बनाना और उस स्थान और कबीले मे ब्रिटिश राज को फिर से कायम करना।

मिशन जब एक हफ्ते से लंबा खिंच गया तो मार्क सोच में पड़ गया। जिस ऑपरेशन को वह ४ दिन की बात समझ रहा था, उसमे इतना समय कैसे लग सकता था। वरिष्ठ सदस्यों की मीटिंग के बाद जब कोई निष्कर्ष नहीं निकला तो मार्क ने अपने २ ख़ास गुप्तचरों को प्लाटून की जासूसी पर लगाया साथ ही वह खुद भी रात में रूप बदल कर प्लाटून की गतिविधियां जांचने लगा। रात के पौने तीन बजे उसे जंगलों में कुछ हलचल दिखाई दी। उस स्थान के पास पहुँचने पर उसे प्लाटून का मेजर रसल और एक कबीले की स्त्री बात करते दिखे। वह महिला रसल के लिए फलों की टोकरी लाई थी और दोनों टूटी–फूटी बोली में एक–दूसरे के आलिंगन में प्यार भरी बातें कर रहे थे। कर्नल ने तुरंत ही पहरा दे रहे सैनिको के साथ मेजर और उस महिला को बंदी बना लिया। सुबह उनकी पेशी में मेजर रसल ने सफाई देते हुए कहा कि व्यापार के लालच में पड़ी ब्रिटिश सरकार की गतिविधियों के कारण इन क़बीलों का प्राकृतिक निवास, खाने और रहने के साधन धीरे–धीरे नष्ट होते जा रहे हैं। यही कारण है कि अब तक ब्रिटिश राज की सभी बातों का पालन करने वाले कबीलों के विद्रोह का बिगुल बजाया। प्लाटून के आने पर जब युद्ध की स्थिति बनने लगी तो अपने जान की परवाह किये बिना रीमाली कबीले की एक साधारण स्त्री शीबा जंगल में बढ़ रहे मेजर को समझाने आई। शीबा के भोलेपन और जज़्बे ने रसल को सुपर मोहित कर दिया। इस वजह से रसल गलत जानकारी देकर प्लाटून को गलत दिशाओं में भटका रहा था। रसल के आश्वासन, धैर्य से शीबा की बात सुनने और निस्वार्थ कबीलों की मदद करने से शीबा को भी उस से प्रेम हो गया। क्रोधित मार्क ने रसल को समझाया की प्लाटून के पास बस २–३ हफ़्तों लायक राशन बचा है इस दूर–दराज़ के इलाके में, चार–पांच सौ कबीलेवासीयों

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

और अपने प्रेम के चक्कर में वह अपने साथियों की जान दांव पर नहीं लगा सकता। धरती पर बोझ ऐसे नाकारा कई कबीलों और भारतियों को ख़त्म कर ब्रिटिश सरकार ने इस देश पर एहसान ही किया है। जब मेजर रसल ने आर्डर मानने से इंकार कर दिया तब कर्नल मार्क ने उन्हें मौत का फरमान सुनाया। रसल और शीबा की अंतिम इच्छा एक आखरी बार एक–दूसरे से लिपटकर मरने की थी। मुस्कुराते हुए रसल ने शीबा को बंदूकधारियों से मुंह फिराकर अपनी ओर देखने को कहा, कुछ पल को रसल की आँखों में देख रही शीबा जैसे भूल गई की यह उसके अंतिम पल हैं। कितनी शांत और दिलासे भरी आँखें थी वो जो ना जाने कैसे मन में चल रहे तूफ़ान को खुद तक आने से रोके हुए थी? चलो बहुत हो गया यह इमोशनल ड्रामा इन दोनों का, उड़ा दो इन बेचारे प्यार में पागल पंछियों को३हा हा हा...कर्नल के डार्क ह्यूमर पर उसके अलावा और कोई नहीं हँसा। मार्क के निर्देशों पर उसके सैनिको ने अन्य सैनिको सामने उन २ प्रेमियों को गोलियों से भून दिया। कुछ दिनों के प्यार में जैसे दोनों ने पूरा जीवन जी लिया था इसलिए आखरी वक़्त में एक–दूसरे से लिपटे रसल और शीबा के चेहरों पर संतोष के भाव थे। कर्नल मार्क का ऐसा निर्दयी रूप और साथी मेजर रसल की मौत देख कर कर कई सैनिकों ने उसका साथ छोड़ कर वापस जाने का निर्णय लिया। आदेशों की अवहेलना और खुद के नेतृत्व पर इतने सवाल उठते देख कर मार्क आगबबूला हो उठा। वापस लौटते हुए सैनिको पर उसने अपने वफादार सैनिको से गोलियों की बरसात करवा दी।

मार्क ने मन ही मन सोचा कि चलो अच्छा हुआ अब राशन ज़्यादा दिन चलेगा और मिशन से लौटने पर इतने सैनिको का शहीद हो जाने पर उसकी बहादुरी, अडिगता के चर्चे होंगे। हालाँकि, मिशन के लगभग तीन हफ़्तों बाद ही इंग्लैंड की सरकार ने भारत छोड़ने की आधिकारिक घोषणा की, पर डूम प्लाटून का दस्ता अपने मिशन के बीच में था और दुर्गम क्षेत्र, दूरदराज़ के मिशन में उन्हें भारत की स्वतंत्रता की जानकारी नहीं मिली। मार्क की हरकत से चिढे उस स्थान के आस–पास के बाकी कबीले भी डूम प्लाटून को मिलकर ख़त्म करने में तरजाक और रीमाली कबीलों के साथ शामिल हो गए। डूम प्लाटून पर चारो तरफ से आक्रमण हो गया। समय के हिसाब से प्लाटून के पास अत्याधुनिक हथियार थे पर इतने जंगलवासियों की संख्या के सामने प्लाटून कमज़ोर पड़ रही थी। प्लाटून को उम्मीद थी कि इतना समय बीत जाने के कारण उनकी मदद के लिए इंग्लैंड सरकार ज़रूर कुछ करेगी पर भारत की आज़ादी के समय बड़े स्तर पर हुई इतनी अधिक घटनाओ के बीच यह बात दब सी गयी और डूम पलाटून के सारे सिपाही कुछ दिनों के संघर्ष के बाद मारे गए। मार्क चाहता तो कबीलों के सामने आत्मसमर्पण कर सकता था पर उसका अहंकार उसकी मौत की वजह बना। जंगलवासियों को भी आज़ादी भारत के साथ मिली पर जंगलियों को आज़ादी मिलने का तरीका भारत जैसा नहीं था।

कुछ दिनों तक सब सामान्य रहने के बाद उन तटवर्ती इलाकों मे बसे कबीलों और जंगलो मे अजीब घटनाये होने लगी। एक–एक कर कबीलों के सरदारों को भ्रामक, डरावने दृश्य नज़र आने लगे, फिर सबकी हरकतें भूतहा होने लगी। कुछ तो अपने ही भाई–बंधुओं को मारकर उनके खून को कटोरी में भर उसके साथ रोटी, खाना खाने लगे। अगर त्रस्त आकर कबीले का

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

https://ComicsJunction.Stck.Me

सरदार बदला जाता तो उसमे भी वैसा पागलपन आ जाता। हर जगह यह बात फैली की मार्क और उसके ख़ास साथियों की आत्माएं कबीलों के सरदारों के शरीर में आ जाती हैं और उन्हें मारने के बाद ही हटती हैं। जब हर जगह कबीले का कोई सरदार ना होने की बात पर सहमति बनी तो फिर कुछ दिन सामान्य बीते। कुछ दिन बात फिर आत्माओं द्वारा लोगो को सम्मोहन से दलदल में बुलाकर खींच लेने के मामले आम होने लगे। अगर कोई जगह छोड़ कर मुख्य भारत में जाता, कुछ समय बाद उसके भी मरने की खबर आती। नवजात शिशु पेड़ों पर उलटे लटक कर कबीले वालों को इंग्लिश में गालियां देने लगे। इन्ही शिशुओं में से कुछ दूध पीते हुए अपनी माताओं के वक्षस्थल से मांस नोचकर खाने लगे। इतनी घटनाओ के बीच वहां के कई कबीले एक के बाद एक रहस्यमय तरीके से ख़त्म होते चले गए। कुछ महीनो बाद वहां रूपनगर से गुज़रती नदी की बाढ़ का ऐसा असर हुआ की वो पूरा इलाका जलमग्न हो गया। बचे हुए कबीलों को भारतीय सरकार ने रूपनगर शहर में पुनर्स्थापित किया।

कई दशकों बाद जलमग्न जंगली इलाका धीरे–धीरे सामान्य हुआ। प्रगति कई ओर अग्रसर रूपनगर शहर का विस्तार करने को जगह ढूँढ रहे उद्योगपतियों और सरकार की नज़र उस तटवर्ती इलाके और जंगलो पर पड़ी। जंगल के कुछ हिस्सों की कटाई और निर्माण का काम शुरू हुआ। जहाँ हजारो मजदूरों के सामने फिर से आई डूम पलाटून की दहशत क्योकि वो अभी भी ब्रिटिश सरकार के आदेशानुसार उन इलाकों मे सिर्फ ब्रिटिश राज स्थापित करना चाहते थे। पहले तो ऐसी अनियमित घटनाओं को कल्पना मानकर नज़रअंदाज़ किया जाता रहा फिर भूतहा बातों का होना आम हो गया जिसके चलते कई मज़दूर और सुपरवाइजर जगह छोड़ कर भाग गए। अपने पापों और दहशत से बढ़ी शक्ति के फलस्वरूप एक दिन डूम प्लाटून साकार रूप में आई, हजारो मजदूरों मे से कुछ को सबके सामने निर्दयता से मार कर डूम पलाटून ने मजदूरों मे अपनी दहशत फैलाई और वहाँ आई बहुत सी निर्माण सामग्री से मजदूरों को ब्रिटिश कालीन इमारते बनाने का निर्देश दिया। उन्होंने मजदूरों और उनके मालिको मे कोई भेद–भाव नहीं किया और सभी से बंधवा मजदूरी शुरू करवायी।

अपने साथियों की मदद से एंथोनी के कौवे प्रिंस ने इतनी जानकारी जुटायी। –

क्या है डूम प्लाटून

– डूम प्लाटून के सभी सैनिक अपनी लाल वर्दी मे है और उनका मुखिया है कर्नल मार्क डिकोस्टा।

– ये मार्क और उसके वफादार १९४७ में रूपनगर के तटवर्ती और जंगली इलाकों मे मर चुके है। प्लाटून में आंतरिक मतभेद के बाद मार्क ने अपने ही कई सैनिको को जंगल में मरवा डाला।

– इनके हथियार इनकी पुरानी बंदूके है जिनकी गोलियां कभी ख़त्म नहीं होती।

– इस पलाटून को इंग्लैंड सरकार से आदेश मिला था की उन तटवर्ती और जंगली इलाकों मे ब्रिटिश राज दोबारा स्थापित हो ये आज भी उस आदेश पर चल रहे है और जो भी इनके रास्ते मे आएगा उसे ये मार देंगे।

– ये बिना थके सालो से उस इलाके की रक्षा कर रहे है और ब्रिटिश सरकार की मदद का इंतज़ार कर रहे हैं।

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

– जंगल में अलग–अलग स्थान पर लाल वर्दी में कुछ आत्माएं और भटकती हैं (मेजर रसल और कर्नल द्वारा मारे गए अन्य सैनिक) वो आत्माएं किसी को नुक्सान नहीं पहुंचाती।)

प्रिंस के ज़रिये यह खबर कुछ ही देर मे एंथोनी तक पहुंची और एंथोनी तुरंत रूपनगर के उस निर्जन इलाके तक पहुंचा जहाँ आज काफी हलचल थी। एंथोनी को डूम पलाटून की कहानी और इतिहास पता चल चुका था। उसने अंदाज़ा लगाया कि डूम प्लाटून और मार्क उसके समझाने पर नहीं मानेंगे। उसकी आशा अनुरूप उनको समझाने की एंथोनी की सारी कोशिशें, तर्क बेकार गए। अंततः उसका और डूम पलाटून का संघर्ष शुरू हो गया। एंथोनी एक शक्तिशाली मुर्दा था पर इतनी आत्माओं से यह संघर्ष अंतहीन सा लग रहा था। वह कुछ आत्माओं को ठंडी आग में जकड़ता तो कुछ उसपर पीछे से हमला कर देती पर जल्द ही प्रिंस की खबर पर एंथोनी की पुरानी मित्र वेनू उर्फ़ सजा भी अपने आत्मा रूप में एंथोनी की मदद करने आ गयी। एंथोनी ने वेनू के तिलिस्म की मदद से डूम प्लाटून को एक जगह बांध कर उन पर एकसाथ ठंडी आग का प्रहार किया वो आत्मायें कुछ देर तड़पने के बाद गायब हो गयी। एंथोनी को लगा की समस्या सुलझ गयी और उसने वहाँ फसे हुए लोगो को निकाला और वापस रूपनगर शहर के मुख्य इलाकों की और चल पड़ा। कुछ ही समय बाद उसे पता चला की उस जंगली इलाके के आस–पास बनी रिहाइशी कॉलोनियों मे डूम प्लाटून फिर से अपना आतंक मचा रही है और वहाँ के लोगो को ज़बरदस्ती पकड़ कर जंगल मे अधूरे पड़े निर्माण को बंनाने में लगा रही है। ऐसा इसलिए हो रहा था क्योकि उद्योगपतियों और सरकार ने जंगली इलाकों की काफी कटाई करवा दी थी जिस वजह से डूम पलाटून को वो कॉलोनियां भी अपने क्षेत्र का हिस्सा लगने लगी थी। एंथोनी फिर वहाँ पहुंचा और एक बार फिर से थोड़े संघर्ष के बाद डूम प्लाटून गायब हो गयी। यह सिलसिला चलता रहा। एक लडाई के दौरान एंथोनी के ये पूछने पर की सब ख़त्म हो जाने के इतने साल बाद भी डूम पलाटून वो क्षेत्र छोड़ कर जाती क्यों नहीं तो कर्नल मार्क डिकोस्टा का कहना था की उन्हें ब्रिटिश सरकार का आदेश मिला है। काफी सोच–विचार के बाद एंथोनी अपने दोस्त रूपनगर डीएसपी इतिहास की मदद से दिल्ली से इंग्लैंड के दूतावास से कुछ ब्रिटिश अधिकारीयों को लाया और उनसे आतंक मचा रही डूम पलाटून को ये आदेश दिलवाया की वो अब किसी भारतीय को परेशान ना करे और ये क्षेत्र छोड़ कर पास ही समुद्र मे बने छोटे से निर्जन दहलवी द्वीप पर रहे।
आखिरकार एक संघर्षपूर्ण भयावह अध्याय की समाप्ति के बाद एंथोनी की आत्मा अपनी कब्र में सोने चली। अगले दिन जब वह वापस कब्र फाड़कर निकलने को हुआ तो एक तिलिस्म ने उसे रोक लिया। सज़ा के शरीर को कब्ज़े में लेकर कर्नल मार्क ने एंथोनी की कब्र को तिलिस्म से बांध दिया था। अब तक अहंकार में चूर मार्क ने बदली सरकार का आदेश मानने से इंकार कर दिया। उसके अनुसार ब्रिटिश राज की सरकार अलग थी, वह इस कठपुतली सरकार का आदेश मानने को बाध्य नहीं था। तिलिस्म की सीमा के अंदर आये बगैर कब्र के ऊपर चिल्लाते प्रिंस ने ये बातें एंथोनी तक प्रेषित की।

इधर डूम प्लाटून अपने अधूरे निर्माण कार्य को पूरे करने में लग गयी। सरकार का ध्यान इस दिशा में गया और अर्धसैनिक बल भेजे गए लेकिन अदृश्य दुश्मन से भला

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

वो कैसे लड़ पाते। उन सबके हथियार छीन कर, डूम प्लाटून ने उन्हें मज़दूरी पर लगा दिया। स्थिति गंभीर हो रही थी और मदद आने तक सरकार, स्थानीय प्रशासन को विचार–विमर्श करना था। ऐसा संभव था कि अपने सफलता से उत्साहित होकर मार्क अपनी प्लाटून के साथ रूपनगर शहर की तरफ कूच करे। अब या तो उस क्षेत्र को क्वारंटाइन घोषित कर सब खाली करवा सकती थी या और मदद भेजने का जोखिम उठा सकती थी, लेकिन हर गुज़रता पल उनकी मुश्किलें और शहर को नुक्सान बढ़ा रहा था। एंथोनी ने प्रिंस को सज़ा की आत्मा से तिलिस्म तोड़ने का तरीका सुझाया। सज़ा के द्वारा तिलिस्म तोड़ने का तरीका जानकर प्रिंस ने तिलिस्म के चारो ओर अपनी चोंच से एक बड़ा तिलिस्म बनाकर उसे निष्फल किया और आखिरकार एंथोनी अपनी कब्र से बाहर आ पाया। मौके की गंभीरता के बाद भी ज़मीन पर तिलिस्म बनाने में प्रिंस की घिसी हुई चोंच देखकर कुछ पलों के लिए एंथोनी अपनी हँसी रोक नहीं पाया, मदद करने के बाद भी एंथोनी को उसपर हंसता देख प्रिंस ने अपनी उबड़–खाबड़ चोंच एंथोनी को चुभाई और कान पकड़ते हुए माफ़ी मांगते एंथोनी ने प्रिंस की चोंच की मरहम–पट्टी की।

कुछ देर में ही एंथोनी एक बार फिर डूम प्लाटून ने सामने था। इस बार कर्नल मार्क ने उस पर तंज कसा, "इस तरह कब तक यह खेल चलता रहेगा मुर्दे एंथोनी? तू एक शक्तिशाली आत्मा है लेकिन हमारी संख्या के आगे तू हमे रोक नहीं सकता। तू अपनी साथी सज़ा के साथ हमारे काम में बाधा डालेगा, हमे रोकेगा। कुछ देर अपनी ठंडी आग में तड़पा लेगा और हम लोग गायब हो जाएंगे। तेरी इतनी मेहनत का फायदा क्या है? हमे मारा नहीं जा सकता, जबकि हम धीरे–धीरे तेरे शरीर को नुक्सान पहुंचा सकते हैं। हम एक जगह से भागेंगे तो फिर कहीं ना कहीं आ जाएंगे! पिछली बार तिलिस्म से कब्र में तेरा शरीर रोका था, अगर अब भी तू ना माना तो इस बार यह सुनिश्चित करूँगा की तेरा शरीर नष्ट हो जाए। सबकी भलाई इसमें ही है कि तू बार–बार हमारे रास्ते में आना छोड़ दे।"

एंथोनी – "तेरे जैसों के मुँह से सबकी भलाई की बातें शोभा नहीं देती कर्नल! एक बात मेरी भी जान ले, तुझसे पहले तेरे जैसी कई ढीट आत्माओं से पाला पड़ा है। एंथोनी का शरीर नष्ट करेगा तो आत्मा रूप में तेरे काम को रोकने आऊंगा। मुझे कभी मुक्ति मिल भी गयी तो इतना याद रख कि इंसाफ और मज़लूम की चीखों का हिसाब लेने के लिए एंथोनी स्वर्ग छोड़ कर आ सकता है। बड़े किस्से सुने हैं तेरी ईगो के जिसे तू प्रेम और लोगो की जान से ऊपर रखता है, देखते हैं पहले मैं डिगता हूँ या तू रास्ता देता है!"

कर्नल मार्क – "ठीक है! जैसी तेरी मर्ज़ी..."

एंथोनी – "एक मिनट! एक बात रह गयी...ज़रा गिनकर बताना तुझे मिलाकर तेरे सैनिक कितने हैं?"

कर्नल मार्क – "३५...क्यों? अब इनके लिए कोई नया तिलिस्म लाया है?"

एंथोनी – "नहीं! ७१ लोगो की डूम प्लाटून में से ३५ निकले तो बचे ३६! आओ तुम्हे बाकी सदस्यों से मिलवाता हूँ। मिलो दिल, भावनाओं वाले डूम प्लाटून के दूसरे हिस्से से जिसका नेतृत्व कर रहें हैं मेजर रसल। अब हुई कुछ बराबर की टक्कर। सज़ा की मदद से तुम्हारा इतिहास जानने के बाद जंगल में

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

कहाँ–कहाँ भटकती इन आत्माओं को ढूंढकर एकसाथ, एक नेतृत्व में लाना था बस।ष

सज़ा ने तट के पास निर्जन दहलवी द्वीप पर एक रास्ते को छोड़कर तिलिस्म से बांध दिया। मेजर रसल ने नेतृत्व में सैनिक मार्क के वफादार सैनिकों को उस तरफ धकेलने लगे। वहीं अपने पापों की वजह से अन्य आत्माओं से कहीं शक्तिशाली दुरात्मा मार्क को एंथोनी और सज़ा अपने सधे हुए वारों से उस ओर ले जाने लगे। सभी सैनिको के द्वीप के अंदर पहुँचने के बाद सज़ा ने बाहर से तिलिस्मी द्वार बंद कर उन्हें दहलवी द्वीप में कैद कर दिया। इसके बाद तुरंत ही डीएसपी इतिहास और अन्य अधिकारियों की सिफारिश पर द्वीप को आधिकारिक रूप से संक्रमित एव खतरनाक घोषित कर दिया गया।

....अब अगर कोई भटकी नौका या यात्री इस द्वीप पर आता है तो उसे २ बराबर संख्या के गुट निरंतर युद्ध करते दिखाई देते हैं। बराबर क्यों? शायद इसलिए की मेजर रसल द्वीप पर नहीं जंगलों में शीबा के पास था और दोनों आत्माएं लगभग सत्तर साल पहले की उस रात की तरह ही टूटी–फूटी भाषा में प्यार भरा संवाद कर रही थी। ....क्या आप दहलवी द्वीप पर जाना चाहेंगे?

समाप्त!

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

काहे डरें

कविता • ऋषभ

का जादा मांगे हम तोसे?
एगो घर, उमा एक कोना,
जरा थोड़ा प्यार, कोई चांदी ना सोना,
तुम का दिए? कोना अंधार का और उमर भर का रोना!
उमर भर भी काहे बोलें!
सुरु ही कहाँ होने दिए तुम हमका!
कभी आगे आये तो भी का मांग लिया तोसे?
रत्ती भर पाठशाला और एक रत्ती भीतर चौखट मा
का का नाही बोले तुम!
कभी कमाल कभी "माल",
तोले हमका जाने कौन कौन काँटा मा!
चाहत रहे पढ़ना एक कालेज हम , पर चाहे टांगना
तुम एगो खूंटी मा!
का थी या का है हमरा गलती?
उड़े की चाहत ही तो पाले रहे,
और दराती फेर दिए तुम ई पंखन मा!
हम भी बन सकत रहे तोहार टेक डंटा,
तुम लाद दिए इज्जत–संस्कार का बोझना।
फीर ले गए तुम्ही बईठा के डोलना,
तो काहे ना रखे किये रहे जइसन वादा?
और धर दिए रहे कई हाथ
जो चाहे हम कछु बोलना।
एगो बात समझ मे ना आवत है हमका,
तोहार माइ भी हम,
बीवी भी हम, बेटी भी हम,
और डायन चुड़ैल भी हम!
डराते हो तुम, जबकी चाही तोका खुद डरना!
लेकीन
एतना भीसन बनाये रखे हो सकल
की डर से जादा हो गए डरावना!
कईसे कह लेत हो मरद खुद का?
ज़बान कांपती नाहि?
जो हाथ तोका सुख दिए!
ओका पर ही कालीख मलते हो
जौन नजर तोसे उम्मीद रखे,
उका मे धोखा बांध दिए!
अब बता डरे तो हम डरे किससे?
भूतन प्रेतन से की आपन अपन से?
हम काहे डरे लेकीन!
डर तो जाओगे तुम जब देखोगे,
जब दीखेगा असली डर का सकल,
कहाँ?
जरा झाँको आईना!!

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

https://ComicsJunction.Stck.Me

एहसास

मनीष मिश्रा

नीरज के जाने के बाद राधिका की जिन्दगी ही जैसे बदल गई थी हर वक़्त, उदासी ही रहती थी, पर इंसान भी अजीब होता, अगर कोई मशीन ख़राब हो जाये तो ख़राब पुर्जा, निकाल कर मशीन सही कर लेता है, या फिर मशीन बदल देता है, खुद दोहरा नकाब ओढ़ लेता है, कहि कुछ और कभी कुछ और। राधिका ने भी ये नकाब ओढ़ लिया था करती भी तो क्या नीरज उसकी मोहब्बत थी, पर अपनी माँ और छोटे भाई से भी मुँह नही मोड़ सकती थी। उसने कभी भी नीरज पर अपनी तन्हाई का कोई इलज़ाम नही लगाया और गुनाहगार भी मानती तो किसे नीरज उससे बेइंतहा प्यार करता था, पर उस दिन चण्डीगढ़ से शिमला जाते वक़्त उसकी कार का खाई में गिर गई थी, उसकी लाश भी तो नही मिली थी, पुलिस और बाकि लोगों का कहना था हादसे में किसी के बचने की कोई सम्भावना नही है। पर मोहब्बत भी अजीब एहसास है, दुनिया के सरे तर्क को झूठ साबित कर देता है ये दिल। राधिका को न मानना था तक उसे न माना, उसका तो कहना था नीरज उसको छोड़ कर नही जा सकता, और वो वापस आएगा उसे लेने। बीते चार साल में उसने अपनी जिम्मेदारी अच्छे से निभाई थी भाई की पढाई ख़त्म हो गई थी, और उसका एयर फ़ोर्स में चुनाव हो गया था। और माँ, ६ माह पहले उनकी मृत्यु हो चुकी थी, मरने से पहले वस एक ही इच्छा थी कि़ राधिका की शादी हो जाती। पर राधिका ने तो नीरज को अपना सब कुछ मान लिया था, अब तो बस उसकी यादो के सहारे ही जिंदगी गुजरानी थी उसे। नीरज की हर बात को उसने अपने सीने से लगा रखा था, और उसकी हर चीज से उसे उतनी ही मोहब्बत थी जितनी वो नीरज से करती थी। इतने सालो तक नीरज को न भूलने की एक वजह ये भी थी कि उसे हर वक्त ये एहसास होता था नीरज उसके आस पास ही है। और घर के बाहर खड़ा उसका इन्तेजार कर रहा है। किसी दिन सुबह वो जब अपने घर से बाहर निकलेगी तो उसे सामने खड़े
पाएगी और वो उसका हाथ पकड़ कर चल देगी।

खैर ये तो जज़बात हैं दुनिया में रहना है तो दुनियादरी भी निभानी पड़ती है। वैसे तो राधिका को पार्टियों में जाना अच्छा तो नही लगता था पर आज उसकी खास दोस्त, सीमा की सगाई थी और सीमा की जिद थी कि़ जब तक राधिका नही आएगी वो अंगूठी नही पहनेगी। सुबह से ६ बार काल कर चुकी थी। शाम के ६ बज चुके थी। भरी मन से उसने तैयार होना शुरू कर दिया। अलमारी खोली तो उसे वो नीले और गुलाबी रंग का लहंगा दिखाई पडा ये उसने नीरज के साथ ही लिया था, पर कभी पहनने का मौका नही मिला नीरज की पसंद थी ये। राधिका भारी मन से तैयार होने लगी, इतने सालो में भी उसमे कोई बदलाव नही आया था, वही सादगी, नीले गुलाबी लहंगे पर हल्की गुलाबी लिपस्टिक, गोरा रंग, आँखों में काजल बस इतना ही उसकी खूबसूरती में चार चाँद लगा दिया था। तब तक फोन बजा, फोन पर सीमा थी, ‘कहाँ हो कितना टाइम लगेगा, ८ बजे का मुहूर्त हैश। “हा बाबा, बस आ रही हु अब तू फोन रखेगी तो आउंगी न।श

राधिका घर अपने फ्लैट से निकली तो लिफ्ट ख़राब थी, अब ५ फ्लोर इन हाई हील्स में उतरना पड़ेगा। ४ फ्लोर पर आते उसका पैर हल्का फिसल और वो गिर पड़ी। सीधे सीढ़ियों के बीच के प्लेटफार्म पर, वो उठी कपड़ो को

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

झाड़ा कुछ ज्यादा नही लगी थी बस सर पर हल्का सा दर्द हुआ। उठने के बाद उसे लगा क़ि जैसे उसका शारीर काफी हल्का हो गया है, जैसे कंधो से कोई बोझ उतर गया था। खैर जल्दी में उसने ध्यान नही दिया हाथ पर बन्धी हुई घडी की तरफ देखा, ओह्हो इसे भी अभी बन्द होना था गिरने से घडी का कांच टूट कर चकना चूर हो गया था और घडी बन्द हो गई थी। वो जल्दी में उतर कर कार के पास पहुची, उसे जाने क्यों बार बार लग रहा था वो पीछे कुछ छोड़ आई है, जैसे बरसो पुराना कोई कर्ज था जो उतर गया। सर्दी का समय था और हर तरफ कोहरा था। उसने धीरे से गाड़ी निकाली, बाहर भी कोहरा ही था, बाहर निकलते ही उसे लगा जैसे नीरज सामने खडा हो, उसने झटके से गाडी रोक दी, पर सामने सिर्फ धुंध सी परछाई बनती हुई निकल गई। उसने गाड़ी आगे बढ़ाई हर तरफ धुंध उसके घर से होटल कुछ २५ किमी ही था पर हर तरफ धुंध ही दिख रही थी उसे गाड़ी बहुत धीरे चलानी पड़ रही थी। सर पर लगी चोट से हल्का दर्द हो रहा था, अचानक ही उसकी गाड़ी बन्द हो गई, उसे कुछ समझ नही आ रहा था कि अचानक क्या हुआ उसने बार बार गाड़ी स्टार्ट की पर कुछ नही हुआ। थक कर वो गाड़ी से बाहर आ गई, की आस पास कोई मदद मिल जाये पर न तो कोई गाड़ी ही दिखाई पड़ी न ही कोई इंसान उसे थोडा डर भी लग रहा था, पर अब वो फंस गई थी थी। मोबाइल निकाला, उफ़ ये आजकल के मोबाइल भी न बस हर वक़्त बैटरी ख़त्म हो जाती है। अचानक उसे एक साया सामने से आता दिखा। "ओह्ह नही, नही , ये नही हो सकता है। नही ये नीरज नही हो सकता" वो साया सामने आकर मुस्कराने लगा, वही नीले रंग की शर्ट और जीन्स पहने हुए उसके एक दम सामने आकर खड़ा हो गया.....

राधिका एकदम सकपकाई नही ये नही हो सकता, "ओह्ह नीरज तुम कहा चले गए थे, मैं कबसे तुम्हारा इंतजार कर रही थी। ओह तुम पर नही ये सच नही हो सकता।" राधिका की आँखे जो सच देख रही थी वो, उसका दिमाग उसे मानने को तैयार नही थी, और उसका दिल तो जैसे सातवे आसमान पर था। "नीरज! कुछ बोलो तो सही , क्या ये सच है , क्या तुम ही हो.?" "हाँ राधिका, ये मै ही हूँ, मैं तो कबसे तुम्हारा इंतजार कर रहा था। अब तुम आ गई हो तो हम साथ हो जायेंगे।"

इतना सुनने के बाद राधिका का दिल बल्लियों उछलने लगा था। उसने आगे बढ़ कर नीरज को अपने सीने से लगा लिया, पर उसे महसूस हुआ जैसे उसने धुंए को पकड़ा हुआ है। वो दूर हटी तो नीरज अभी भी मुस्कुरा रहा था। नीरज ने कहा, "बहुत देर हो गई है अब चले।" राधिका ने कहा, "हा वो सब तो ठीक है, पर सीमा की सगाई है आज, हमे वहां चलना वहा सब तुम्हे देख कर बहुत खुश होंगे।" " नही, राधिका अब तक वहाँ सब जा चुके होंगे, और वैसे भी इतने वक़्त बाद हम मिले हैं, मैं कुछ वक़्त दुनिया की भीड़ से तुम्हारे साथ बिताना चाहता हूँ।" "अच्छा ठीक है, जैसा तुम कहो मैं सीमा का दिल तो नही तोडना चाहती पर जब उसे पता चलेगा मैं तुम्हारे साथ हूँ, तो वो कुछ नही बोल पायेगी आखिर वो मेरी दोस्त जो है। ठीक है चलो जहाँ तुम्हारा दिल कहे। "

ष्, मै एक ऐसी जगह जानता हूँ जहाँ हमारी सारी परेशानियां दूर हो जायेगी इतना, लम्बा इन्तेजार खत्म हो जायेगा, मैं और तुम से हम हो जायेंगे, वहाँ जाने के बाद हमारी सारी ख्वाहिशे पूरी हो जाएँगी।" "अच्छा चलो भी, अब या सिर्फ बताते ही रहोगे, ऐसी खूबसूरत जगह देखने को तो मेरा दिल बेताब ही रहा है, और वैसे भी ऐसी कोई भी जगह जहाँ तुम्हारा साथ हो, वो दुनिया की सबसे खूबसूरत जगह होगी। पर हम वहां जायेंगे

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

कैसे मेरी गाड़ी तो ख़राब हो गई है, और आस पास कोई टैक्सी भी नही है।" " उसकी चिंता मत करो, कुछ दूर पर गाडी मिल जायेगी अब चलो।" दोनों आगे बढ़ते हर तरफ कोहरा ही था बस बीच बीच में कही कोई स्ट्रीट लाइट जल रही होती थी। थोड़ी दूर आगे जाने पर एक पुरानी कार दिखाई पड़ी। नीरज उसके पास गया और उसे स्टार्ट किया राधिका भी पीछे – पीछे ड्राईवर के बगल की सीट पर बैठ गई। अंदर से काफी अच्छी दिख रही थी। गाड़ी स्टार्ट हुई और धुंध भरी सड़क पर भागने लगी हालांकि आगे सिर्फ धुंध ही थी, और कुछ भी दिखाई नही पड़ रहा था फिर भी नीरज बड़े आराम से गाड़ी चला रहा था बिना किसी दिक्क़त के।

राधिका बोली "अरे ! तुमसे मिलने की ख़ुशी में मैंने सीमा को फोन तो किया ही नही के मै नही आ पाऊँगी।" " उसकी चिंता मत करो अब तक उसे पता चल गया होगा। और फिर वो समझ जायेगी की तुम्हरी कोई मज़बूरी होगी।' नीरज ने बड़े शांत लहजे में कहा। राधिका उसकी तरफ देखने लगी स्ट्रीट लाइट की चमक नीरज के चेहरे पर पडी और राधिका की चीख निकल नीरज, 'ये.... ये तुम्हारा चेहरा।' उसने एक झटके से गाड़ी रोक दी, "अरे क्या हुआ.. ?" "अरे.... वो अभी तुम्हारे चेहरे को पता नही क्या हुआ ऐसा लगा जैसे सारा मांस सड गया हो और आँखों से कीड़े बिजबिजा रहे हों।" " कुछ भी तो नही हुआ है, तुम खुद देखो।" उसने दोबारा देखा तो उसे सब कुछ सामान्य लगा। तुम्हे कुछ वहम हुआ होगा, अक्सर ऐसे रातो में धोखा हो जाता है।" राधिका ने कहा, "शायद...! मुझे तो बस तुमसे मिलने की ख़ुशी है, अच्छा कितनी दूर है तुम्हरी वो सुकून की जगह।" ' बस हम पहुँच गए..... सामने देखो वो रही।' राधिका ने देखा तो कुछ दूर लकड़ी से बना एक घर दिखाई पड़ रहा था उसके आगे धुन्ध थी। नीरज ने गाड़ी रोक दी। 'अब हमे यहाँ से पैदल ही जाना होगा। ऐसा करो तुम चल कर पहुँचो मैं कुछ खाने के लिए लेकर आता हूँ।" "तुम, मुझे अकेले छोड़ कर कहाँ जा रहे हो मुझे डर लगेगा तो, वैसे भी यहाँ खाने को क्या मिलेगा।" "तुम परेशान मत हो मै बस अभी आता हूँ, और अब तुम्हरा कोई कुछ नही कर सकता तो डरो मत।" राधिका धीमे कदमो से उस घर की तरफ बढ़ने लगी, कुछ देर चलने पर उसे लगा जैसे उसने धुंध की चादर पार कर ली और पीछे कुछ नजर नही आ रहा था, आगे वो लकड़ी का मकान साफ नजर आ रहा था और ये क्या था ये मकान तो इतनी बड़ी झील के किनारे पर बना हुआ था, और इस जगह का कभी जिक्र क्यों नही सुना उसने इतनी बड़ी झील और किसी और को पता भी नही इस बारे में। राधिका के दिल की धड़कने तेज हो गई वो तेजी से उस घर के दरवाजे तक पहुची, दरवाजा खुला था वो एक बड़े से हाल में खुल रहा था। अंदर से घर काफी शानदार था पर वहां ज्यादा रौशनी नही थी। वो आगे बढ़ी वहां कोई न था । उसने आवाज दी कोई है, कोई जवाब नही मिला। उसे दाहिनी तरफ एक दरवाजा खुला दिखा, वो अंदर गई तो दिवार पर एक तस्वीर लगी थी शायद कोई पेंटिंग थी, किसी लड़की की, नीचे लिखा जून १९८५– नवंबर २०१६ उसने गौर से देखा नीला गुलाबी लहंगा, ओह्ह नही ये तो उसकी ही तस्वीर थी। वो हडबडी में कमरे से बाहर भागी एक दरवाजे से होते हुए दूसरे दरवाजे में जा घुसी ये कोई पुराना सा कबाड़ वाला कमरा था, कमरे में ज्यादा सामान नही था, कुछ पुराने लैंप शेड जो जगह जगह से टूट गए थे एक धूल भरा बक्सा जो काफी पुराना था, राधिका की नजर उस बक्से से नही हट रही थी, उसने आगे बढ़ कर बक्से को खोल दिया उसमे एक दो पुराने अख़बार थी जिसपर नीरज की तस्वीर थी , 'कार एक्सीडेंट में

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

https://ComicsJunction.Stck.Me

युवक की मौत' गाड़ी खाई में गिरने की वजह से लाश का पता नही चला पाया। राधिका जोर से चीखने लगी। चीख कर भागी तो एक दूसरे कमरे में जा घुसी सामने एक बड़ा सा आइना लगा था जिसमे उसका अक्स नजर आ रहा था, राधिका जैसे ही आईने के सामने पहुंची उसके हाथ कांपने लगे , जो उसे दिखाई पद रहा था वो किसी भी कमजोर दिल इंसान को हृदयाघात करने के काफी था। उसकी खोपड़ी का एक हिस्सा चिटक कर अलग हो गया था, उसमे से दिमाग बाहर झांक रहा था और खून की धार नीले गुलाबी लहंगे का रंग सुरमई किये जा रही थी।

राधिका की चीखे निकल गई वो बाहर की तरफ भागी एक दरवाजे से दूसरे दरवाजे को पार करते हुए वो भागकर झील के किनारे वाले हिससे की तरफ आ गई वहाँ पर नीरज बड़ी शांति से खड़ा था। उसने नीरज को देखा तो उसके सीने से जा लगी। "कैसी जगह है ये..?" उसने कांपते होंठो से कहा। "वो तस्वीर वो पुराना अख़बार, और आईने में ये सब क्या है ..? इतने सालो बाद मिले ही और ये कैसी जगह ले आई तुम मुझे..?" " तुम अब तक नही समझी..! जो तुमने देखा वो तो उनके लिए है जो अभी भी दुनिया के मायाजाल में फंसे हुए हैं। मैं और तुम तो अब आजाद ही गए हैं। तुमने ही तो कहा था कि मै तुम्हे लेने आऊंगा, तो चलो आज वक़्त आ गया है हमारे साथ रहने का।" नीरज ने बड़े सर्द लहजे में कहा। राधिका ने नजर उठा कर देखा तो नीरज का चेहरा वैसे ही कंकाल की तरह था छाती से खून के धब्बे दिख रहे थे, उसने खुद को देखा लहंगे का रंग सुर्ख लाल था खून के निशान अब सूख रहे थे। "क्या सच ये सच है..? क्या हमारा सफ़र खत्म हो गया है।" नीरज ने जवाब दिया "अब तो हमारा सफर शुरू हुआ है। जो रुका था बस तुम्हारे इन्तेजार में अब चलो देर हो रही है।" नीरज ने कुछ दूर पर पड़ी एक हाथ से चलने वाली नाव की तरफ इशारा किया। दोनों जाकर नाव में बैठ गए और नीरज पतवार चलाने लगा। कुछ दूर जाकर धुंध में दोनों गुम हो गए।

राधिका का घर, सीमा नही नही ये नही हो सकता अभी कुछ देर पहले ही तो मुझसे बात हुई थी। इंस्पेक्टर " देखिए मैडम आप खुद को कण्ट्रोल करिये। जो होना था वो तो हो गया। अब क्या कर सकते कुछ कानूनी कार्यवाही है वो तो पूरी करनी पडेगी। आप इनके घर वालो को खबर कर दीजिये ताकि कल सुबह तक पोस्टमार्टम हॉउस से वो बॉडी ले सके ।" राधिका की लाश सामने पडी हुई थी खोपड़ी फट चुकी थी दिमाग बाहर आ गया था।

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

राज कॉमिक्स के पतन के मुख्य कारण

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

Archie Clayton

आर्ची क्लेटन

1) पाठकों पर ढ़ीली पकड़ : जब मनोज और तुलसी कॉमिक्स जैसे प्रकाशन अपनी अंतिम साँसे गिन रहे थे तब RC उनके प्रशंसकों को अपने में परिवर्तित नहीं कर पाया ।

2) औसत मार्केटिंग : RC के स्वर्णिम युग के अलावा छोटे कस्बों–शहरों में राज कॉमिक्स ढूंढना और खरीद पाना बेहद कठिन रहा ।

3)कॉमिक्स से एनीमेशन में असफ़ल संक्रमण : RC ज्ववदे जिस धूम–धाम से शुरू हुआ उतनी जल्दी बंद भी हो गया । थोड़ी सही योजना और दिशा RC Toons को आज छोटा भीम और दूसरे देसी एनीमेशन से बेहद आगे रख सकता था ।

4) RC के टूटते वादे और स्थगित रूपहले परदे के प्रोजे़क्ट : सोनू सूद के नागराज और कुणाल कपूर के डोगा तक किसी–ना–किसी कारण राज कॉमिक्स के सभी वादे टूटते गए और प्रशंसकों की निराशा निरंतर बढती गयी ।

5) रद्द सीरीज : राज कॉमिक्स की बहुत–सी सीरीज और सिंगल कॉमिक्स जैसे डेड गोड्स, गम और दम, सिंस ऑफ़ दी फ़ादर आदि की घोषणा भी ज़ोर–शोर से हुई लेकिन बाद में उनका ठन्डे बसते में जाना और नुकसान कर गया ।

6) अनियमित सेट : एक समय राज कॉमिक्स के माह में दो–दो सेट आते थे लेकिन वक़्त के साथ ना सिर्फ सेट की संख्या में कमी होने लगी वरन पूर्व घोषित तिथि के बीतने के बहुत बाद वो प्रकाशित हुए । सन २०१६ में अभी तक २ सेट भी पूरे प्रकाशित नहीं हुए है ।

7) सेट में कॉमिक्स की कम संख्या : पहले जहाँ एक सेट में कम से कम ५–८ कॉमिक्स प्रकाशित होती थी अब अधिकतम ४ कॉमिक्स से ज्यादा प्रकाशित नहीं होती है ।

https://ComicsJunction.Stck.Me

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

https://ComicsJunction.Stck.Me

8) सीरीज को अत्यधिक लम्बा खिंचना : एक तो पहले ही राज कॉमिक्स के सेट इतने देर से आते है उस पर लम्बी सीरीज जिसमे हर कॉमिक्स के अगले भाग में

कम–से कम 5 माह के अंतर का होना ! इन सभी कारणों से पाठकों का रुझान और कम होता गया ।

9) लोकप्रिय पात्रों की सीरीज बंद करना : हाल फ़िलहाल नागराज, सुपर कमांडो ध्रुव और डोगा के अलावा और किसी पात्र की एकल सीरीज नहीं आ रही है । मल्टी–स्टार कॉमिक्स अच्छी बात है लेकिन पाठकों की लगातार मांग के बावजूद परमाणु, तिरंगा, स्टील, भोकाल, शक्ति आदि की एकल सीरीज ना लाना भी पाठकों को क्षुब्ध कर गया ।

10) अनावश्यक किरदारों को बढ़ावा देना : कॉमिक्स फैन हमेशा से दो भागों में बनते है जो अपने–आप में एक विवादित टॉपिक है । पहले फैन वे है जो बांकेलाल को बेहद पसंद करते है और दूसरे वे जो

बांकेलाल को केवल फूहड़ हास्य मानते है । हालाँकि सत्य यही है के समय के साथ बांकेलाल की कहानियों की गुणवता कम हुई है और उसमे फूहड़ता बढती गयी है फिर राज कॉमिक्स लगातार उस सीरीज को चलता जा रहा है ।

11) लगातार गिरता आर्टवर्क : इसमें कोई दो राय नहीं है की आर्टवर्क लगातार गिरता जा रहा है । जिन लोगों ने पुरानी कॉमिक्स और अभी कुछ नए वक़्त की कहानी पढ़ी है वो इस बात से बिलकुल सहमत होंगे ।

12) नागराज को नित्य नयी शक्तियाँ देना : RC मैनेजमेंट का पूरा ध्यान केन्द्रित सिर्फ नागराज पर ही है । उड़ने से लेकर उसके पार हर कॉमिक्स में इतनी नयी शक्तियाँ आ जाती है जिससे उसके विलन के विरुद्ध मुक़ाबले का रोमांच ही ख़त्म हो जाता है ।

13) दूसरे प्रकाशन के प्रसिद्ध किरदारों के कॉपीराइट प्राप्त करने की असफ़लता : राज कॉमिक्स का अपने पात्रों को बढ़ावा देना निस्संदेह अच्छा कदम था लेकिन वक़्त की मांग देखते और बड़े आसान शब्दों में ज्यादा लाभ कमाने की दृष्टि से राम–रहीम, क्रुक–बांड, तूफ़ान, इंद्र, अंगारा, तौसी, अज़गर आदि पात्रों के कॉपीराइट खरीद उन्हें भी अगर RC यूनिवर्स में मिला लिया जाता तो आज हालत कुछ और हो सकते थे ।

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

14) अंतर्राष्ट्रीय ब्रांड के साथ क्रॉस–ओवर ना कर पाने की असमर्थता : स्टेन ली जैसे लीजेंड जब भारत – केन्द्रित हीरो चक्र जैसे किरदार रच रहे है उसके बावजूद राज कॉमिक्स किसी भी विदेशी या अंतर्राष्ट्रीय ब्रांड के साथ कोई क्रॉस–ओवर इवेंट नहीं कर पायी है जबकि ऐसे इवेंट कॉमिक्स प्रेमियों के लिए स्वर्ग बराबर हो सकते है । साथ–ही–साथ ये भारतीय हीरोज़ को विश्व में मशहूर कर देंगे ।

अंत में मैं यहीं कहना चाहता हूँ की हम सभी राज कॉमिक्स को बेहद प्रेम करते है और जिस तरह आज ये बंद होने के कगार पर है अगर उपरोक्त बिन्दुओं पर

ध्यान दिया जाए तो पाठक लम्बे समय तक राज कॉमिक्स की कॉमिक्स का आनंद उठा पाएंगे ।

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

https://ComicsJunction.Stck.Me

सार्जेंट भूतनाथ

समीक्षा • मनीष मिश्रा

लेखक – तरुण वाही
सहयोग – विवेक मोहन
सम्पादन – मनीष गुप्ता
पेन्सिलिग – धीरज वर्मा
इंकिंग – भूपेंद्र वालिया, अज़हर, प्रदीप सहरावत
कैलीग्राफी – टी आर आज़ाद,
रंग – सुनील पाण्डेय

राज कॉमिक द्वारा थ्रिल, हॉरर सस्पेंस सीरीज में प्रकाशित सार्जेंट भूतनाथ एक बहुत ही औसत कॉमिक, जो किसी भी परिप्रेक्ष्य में हॉरर या सस्पेंस पैदा नही करती। काफी समय बाद राज कॉमिक ने अपने इस सेक्शन को पुनः स्थापित करने की कोशिश की और अपनी इस कोशिश में पूर्ण रूप से असफल ही रही। कहानी शुरू होती है एक पुलिस वाले की आत्मा द्वारा गुंडों को मारने से, और आगे बढ़ती है। कहानी परिवार की जिम्मेदारी माँ की मौत, बहन की शादी ,पिता के उसूल इन सब बातो को दिखाती है पर दिखाने का तरीका बिल्कुल बचकाना सा लगता है। ट्रैफिक हवलदार अमर नाथ की हत्या सिर्फ इसलिये कर दी जाती है कि वो अपना फ़र्ज़ निभा रहा था, मरकर उसकी आत्मा वापस आती है और अंत में कुछ् गुंडों को मारकर कहानी ख़त्म हो जाती है। इस कॉमिक में जितना मजबूर अमरनाथ को अपनी वास्तविक जिंदगी में दिखाया गया है वो काफी बोर करता है, भृष्ट पुलिस ऑफिसर, जो उसकी तैनाती दंगा ग्रस्त इलाके में कर देते हैं क्योंकि वो ईमानदार है। जहां उसकी हत्या हो जाती है और बस अपराध करने वालो से बदला लेने का सफर शुरू हो जाता है। कहानी बिलकुल बॉलीवुड मसाला फ़िल्म की तरह लगती है, जिसमे सारे मसाले एक साथ डालने की कोशिश की गई है। भूतनाथ वापस ये कहकर चला जाता है कि वो भ्र्ष्टाचार और अपराध करने वालो से बदला लेने वापस आएगा। यकीन मानिये ऐसी बहुत सी कहानियाँ आप पहले भी पढ़ चुके होंगे और शायद उन्हें इससे बेहतर तरीके से पेश किया गया होगा।

चित्र और रंग दोयम दर्जे के गुंडों को मारने के लिए भूतनाथ बस उनके शरीर में घुस जाता है। बस चित्रो के द्वारा यही दिखाया गया है। भूतनाथ का कोई सीन डर पैदा नही करता, और शायद इस को देखकर छोटे बच्चे भी न डरते।

लेखन और कहानी का स्तर बहुत नीचे है। संवाद बिल्कुल भी प्रभावी नही हैं। हा भूतनाथ द्वारा तीलउ की गई इबक फॉर आर्म्स, इ फॉर बुलेट प्रभवित कर सकता था अगर उसका उपयोग सही ढंग से किया जाता।

पूर्ण रूप से देखें तो यह एक निराश करने वाली कॉमिक थी, जिन लोगों ने बचपन में एक कटोरा खून और हुउउउ जैसी कॉमिक पढ़ी और राज कॉमिक के इस सेक्शन को पसंद करते इसे पढने के बाद उनका राज कॉमिक के थ्रिल हॉरर सस्पेंस कैटगोरी से भरोसा उठ जायेगा। इन्ही सब कारणों की वजह से राज कॉमिक्स काफी प्रयास के बाद भी इस वर्ग में लोकप्रिय नही हो पाई।

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

'अंध' विश्वास

कहानी •अंकित निगम

आधी रात, तकरीबन ३:१५ बज रहे थे, हल्के से सर्द मौसम में कोहरे की चादर अपना दायरा बढ़ाने में लगी हुई थी। इलाहाबाद जैसे छोटे शहर में इस वक़्त सन्नाटे के अलावा सिर्फ आवारा कुत्ते मिलते हैं, या वो इक्के दुक्के लोग जो किसी विशेष परिस्थितिवश सड़क के मेहमान बने हों। ऐसा ही एक मेहमान 'अर्णिम' इस वक़्त अपनी मोटरसाइकिल पर चला जा रहा था। वैसे तो वो इस वक़्त अपने ऑफिस में होता है पर आज काम जल्दी ख़त्म हो जाने की वजह से वो इतनी रात गए सड़क पर था। व्रऊऊऊम .... व्रऊऊऊम.... हाल ही में सर्विस कराई हुई मोटरसाइकिल की आवाज रात के सन्नाटे में दूर तक गूँज रही थी, साथ ही गूँज रहे थे कुछ शब्द, अर्णिम के दिमाग में,

"मेरी बात मानों भाई इतनी रात गए नदी पार करना ठीक नहीं है, नदी के भूत शरीर पर कब्ज़ा कर लेते हैं।"

अर्णिम को भूत वूत में रत्ती भर भी विश्वास नहीं था लेकिन ना जाने क्यों नीलेश के कहे शब्द उसके कानों में लगातार गूँज रहे थे। वो सोंच में ही था कि अचानक

भौं... भौं... भौं...

सड़क के आवारा कुत्ते उसपर भौंकने लगे। ये बिना तनख्वाह के चौकीदार कभी कभी यात्रियों को अच्छा खासा डरा देते हैं, कम से कम ऐसी सुनसान रात में तो जरूर।

"हट बे।"

अर्णिम ने लात से झिड़कते हुए गाड़ी की गति बढ़ा ली तब जा कर पीछा छूटा।

"ये कमबख्त भी दिन भर की भड़ास रात में ही निकालते हैं।" वो बड़बड़ाता हुआ चला जा रहा था की उसकी नज़रें दो चमकती हुई आँखों पर पड़ीं। अँधेरा बहुत गहरा था और उन गोल चमकती आँखों का स्वामी नज़र से ओझल, अर्णिम के चेहरे पर डर के लक्षण दिखाई देने लगे। कुछ नज़दीक आने पर, जब हेड लाइट की रौशनी उन आँखों पर पड़ी,तो अर्णिम ने पाया कि वहां पर एक बिल्ली थी, जो शायद वहाँ से निकलने के लिए सड़क के खाली होने की राह देख रही थी।

"मैं भी फालतू में डरने लगा, जबकि भूत प्रेत तो होते ही नहीं हैं। क्या मौसी!! खाली पीली डरा दिया।" अर्णिम ने अपने आपको सँभालते हुए खुद से ही बोला।

लगभग आधा रास्ता पार हो चुका था और अब वो नैनी की ओर जाने वाले यमुना ब्रिज पर आ चुका था। पूरी तरह से लोहे के बने इस पुल का निर्माण अंग्रेजों ने सन १८५० में कराया था, जिसमें आने और जाने के लिए अगल बगल दो अलग हिस्से थे और दोनों में ही ऊपर की तरफ रेलवे ट्रैक भी था। वैसे तो पुल के इस्तेमाल की अवधि सन १९५० में ही समाप्त हो चुकी है पर देश में ऐसे अधिकांश पुलों की तरह ही इसपर भी आवागमन जारी है, जबकि कुछ वर्षों पहले ही इसकी जर्जर हालत को देखते हुए इसपर बड़ी गाड़ियों का जाना रोक दिया गया था। इससे भी ज्यादा अजीब बात ये है कि ट्रेन का गुजरना अभी भी जारी है। नदी के ऊपर अर्णिम की मोटरसाईकिल की आवाज़ एकदम से बदलने लगी। फट फट फट फट फट फट फट की कनफोड़ू आवाज़ पूरे वातावरण में फ़ैल गई। इस अनचाहे परिवर्तन से अर्णिम के माथे पर बल पड़

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

गए। अभी चार पांच पल ही बीते होंगे कि ब्रिज पर किसी मालगाड़ी ने प्रवेश किया
धड़ धड़!! धड़ धड़!! धड़ धड़!! धड़ धड़!!
शांत वातावरण में फैला शोर पहले ही बहुत डरावना था उसपर रेल की ध्वनि ने मोटरसाइकिल की ध्वनि के साथ मिलकर माहौल को और भी डरावना बना दिया। रेल के कम्पन के साथ पूरा पुल जोरों से काँपने लगा। ऐसा लग रहा था मानों पुल आज ही गिरने वाला हो। अर्णिम के चेहरे पर अब भय के भाव परिलक्षित होने लगे थे। उसने गति और बढ़ा दी, वो जल्द से जल्द ब्रिज पार कर लेना चाहता था। तभी कोहरे के दामन में खड़े एक साये पर उसकी नज़र पड़ी। सर से लेकर पाँव तक एक शॉल से ढ़का साया। ये भी देख पाना संभव ना था कि वो साया पुरुष का है या महिला का। थोड़ी देर पहले तेज़ की गई मोटरसाइकिल की गति फिर से धीमी पड़ने लगी साथ ही उसकी फटफटाती आवाज़ भी। रेल का शोर अभी भी भयानक था लेकिन वो साया बिना इन बातों की परवाह किये एक ही दिशा में सतत गति किये जा रहा था। अर्णिम का चेहरा डर से सफ़ेद पड़ने लगा। अपनी समस्त इच्छाशक्ति को बटोर कर अर्णिम ने अपने आप से कहा "भूत सिर्फ मन का वहम है और कुछ नहीं।" धीरे धीरे उसने साये को पार किया। आगे आने के बाद वो पता करना चाहता था कि वो साया वास्तव में इंसान का था या.... . लेकिन दिमाग में कुछ चल रहा था...

".....वो बहादुरी से वहाँ से निकल लिए पर... उस चुड़ैल ने बड़ी मासूमियत से उन्हें पुकारा, सोनू, मोनू तो समझदार थे वो उसकी चाल भाँप गए पर गोलू... गोलू ने पलट कर चुड़ैल की तरफ देखा... यही तो वो चाहती थी, उसने उसी समय गोलू की आत्मा को अपना गुलाम बना लिया......"
"साहब, बड़े बुजुर्ग कहते हैं कि आत्माओं को कभी पलट कर नहीं देखना चाहिए।"

दिमाग में उमड़ती इन बातों ने अर्णिम को चाह कर भी पलटने नहीं दिया। उसे लग रहा था कि उसे एक बार पलट कर देख लेना चाहिए वरना वो कभी भी इस एहसास को भुला नहीं पाएगा। लेकिन डर....
..... वो डर, जो उसके ज़ेहन में बहुत अंदर तक घर कर चुका था, ने उसे मुड़ने नहीं दिया। पलटने या ना पलटने की कश्मकश में उलझा हुआ वो अभी पुल से बाहर ही निकला था कि, अचानक उसके दाहिने हाथ और पैर पूरी ताक़त से ब्रेक पर कस गए,
चीं,
"मम्मीईईईईईईई....."
एक झटके से मोटरसाइकिल रुकी और अर्णिम की चीख निकल गई। सामने ट्रक था... रुका हुआ...
"य... ये...ये कहाँ से आया, अभी तो कुछ भी नहीं था.... नहीं नहीं... शायद मैनें कोहरे के कारण देखा नहीं... ये यहीं होगा... पहले से।"

अर्णिम के होंठ सूख चुके थे और शरीर काँपने लगा। रेल गुज़र चुकी थी और अब मोटरसाइकिल भी खामोश हो गई थी, फिर भी सन्नाटा में एक आवाज़ थी।
ठक..ठक.. ठक.. ठक..
लाठी के ज़मीन पर पड़ने की आवाज़, जो धीरे धीरे तेज़ हो रही थी। तेज़... और तेज़। शॉल वाली आकृति करीब आ रही थी। भयभीत अर्णिम बिना पलटे मोटरसाइकिल की किक मारने लगा... बेतहाशा!! डर के मारे वो ये भी भूल चुका था की गाड़ी में सेल्फ स्टार्ट भी है।
फट फट फट फट फट फट
गाड़ी चालू हुई और वो बिना रुके, बिना पलटे गाड़ी भगाता रहा, जब तक वो घर नहीं पहुँच गया। घर पहुंचकर उसकी जान में जान आई।

ऊपर नीचे होती सांसों के संभल जाने के बाद वो अपनी

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

हथेलियाँ घुटनों पर टिकाए खड़ा था कि उसकी नज़र मोटरसाइकिल के साइलेंसर पर पड़ी, जिसका एक नट गायब था और नट होल मुह बाए उसे चिढ़ा रहा था। गाड़ी की आवाज़ बदलने की वजह अब उसकी समझ में आ गई। चेहरे पर फैली डर की सफ़ेदी होठों पर उभरी मुस्कुराहट में घुलकर जाती रही।

''''''''''

"ये क्या अर्णिम? जाने की तैयारी?"

"और नहीं तो क्या, अब रुककर क्या करोगे।"

"भाई घड़ी देख लो ज़रा, २:४० हुए हैं, इतनी रात को बाहर जाना ठीक नहीं, ऊपर से तुझे तो नदी भी पार करनी है...."

".... और रात में नदी के ऊपर भूत–प्रेत–आत्मा भटकते हैं... हैं ना?.. . क्या यार नीलेश तुम भी ।"

"मेरी बात मानों भाई इतनी रात गए नदी पार करना ठीक नहीं है, नदी के भूत शरीर पर कब्ज़ा कर लेते हैं, वैसे भी कुछ ही देर की तो बात है, कुछ देर रुककर चले जाना, तब तक उजेला भी हो जाएगा।"

"अबे बंद करो अपनी बकवास, जब से नाइट शिफ्ट लगी है तबसे पहली बार तो इतनी जल्दी काम ख़त्म हुआ है, इस बचे हुए टाइम में घर जाकर खाट तोडूंगा ना कि तेरी उलूल–जुलूल बातें सुनूँगा।"

अर्णिम और नीलेश के बीच ये बहस थोड़ी देर और चलती अगर प्रजेश ने बीच में टोका ना होता।
"तुम दोनों फिर शुरू हो गए आत्मा–परमात्मा को ले कर"

"परमात्मा नहीं, फिलहाल तो सिर्फ आत्मा का ही बखान चालू था भाई।"
अर्णिम ने पलटकर प्रजेश को जवाब दिया तो प्रजेश उसे समझाने के लहज़े में बोला

"वैसे बात कोई भी हो पर ये सच है की रात काफ़ी है और बाहर ठीक ठाक कोहरा भी है, ऐसे में सुनसान रास्ते से जाना अकलमंदी नहीं है।"

"हद है यार अब तुम भी इसकी बीन बजाने लगे।" अर्णिम के चेहरे पर खीज के भाव साफ़ दिख रहे थे, पर प्रजेश ने अपनी बात को और वजन देते हुए कहा
"अर्णिम बाबू इतनी रात गए सुनसान रास्तों में भूत–प्रेत हो ना हो चोर उचक्के तो होते हैं ना!"

".... और अगर वो भी ना हों तो सड़क के आवारा कुत्ते तो पक्का होंगे भाई।"
नीलेश प्रजेश की बात को बीच में काटते हुए बोला

"भाई तू क्लियर कर कि तुझे भूत से ज्यादा डर लगता है या आवारा कुत्तों से।"
अर्णिम ने नीलेश की चुटकी लेते हुए कहा और नीलेश के अलावा सभी हंस दिए। अंततः अर्णिम ने दोनों की बात मानकर रुकने का फैसला कर लिया। कुछ ही देर में सब लोग वहां इकट्ठा हो गए और फिर शुरू हुआ अलग अलग किस्सों का सिलसिला, आखिर समय भी तो काटना था।

"वैसे कुछ भी कहिये साहब आत्माएं तो होती हैं।" ऑफिस के चपरासी छेदीलाल ने अपना किस्सा शुरू किया "हम जब लरिका रहे तब्बै एगो दांई हमार छोटके काका को प्रेत लगे देखे रहे, जौन तांडव करत रहे मुंडी घुमाए घुमाए की का कहें, डॉक्टर से लेके नीम हकीम सभई हाथ खड़े कर दिए रहें। आखिर मा झाड़ फूंक कराए तब जाके बला टली।"
किस्सों का दौर चल निकला। कोई पीपल की चुड़ैल का तो कोई पुरानी हवेली के खौफनाक साये का

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

भुक्त भोगी था, सबकी अपनी अपनी कहानी थी जो भूतों से जुडी थी। अर्णिम के लिए ये बातें कोरी बकवास थीं। उसे इन सब पर जरा भी विश्वास नहीं था। उसका मानना था की लगभग हर कोई सुनी सुनाई बातों पर यकीन कर लेता है और फिर वो बात एक कान से दूसरे, दूसरे से तीसरे और इस तरह पूरे इलाके में फैल जाती हैं जिनका वास्तव में अस्तित्व ही नहीं होता।

“अच्छा ये बताओ, क्या किसी ने कभी अपने जीवन में खुद भूत, प्रेत या आत्मा को महसूस किया है।” सबकी बातों को काटते हुए अर्णिम ने सवाल दागा।

“क्या सोंचने लगे? किसी ने नहीं किया ना? क्योंकि हक़ीक़त में ये होते ही नहीं है। और अब मैं ये बकवास सुनने में अपनी अच्छी वाली नींद की कुर्बानी नहीं दूंगा इसलिए मैं तो चला घर।” अर्णिम ने उठते हुए कहा पर उसके आगे बढ़ने से पहले ही नीलेश बोल पड़ा, “मैंने महसूस किया है।”

“अच्छा !! कब?” अर्णिम ने हाथों को मोड़ते हुए पूछा और नीलेश ने बताना शुरू किया–

“जब मैं पहली बार किराए वाले कमरे पर गया था तो मैंने महसूस किया कि वहाँ पर कोई है, कोई जो बार बार किचन के दरवाजे पर आकर खड़ी हो जाती है, एक बार तो ऐसा भी लगा जैसे वो मुझे उठने भी नहीं देगी, और तुम तो जानते ही हो कि बाद में पता करने पर मालुम हुआ कि उस घर में एक औरत ने फांसी लगाई थी।”

“पर मैंने अपने पच्चीस साल की जिंदगी में कभी भी ऐसा कुछ महसूस नहीं किया और इसलिये अब तुम कुछ भी कहो मैं घर जा रहा हूँ, वैसे भी तुम्हारी मोहब्बत में आधे घंटे से ऊपर का खून कर चुका हूँ।” नीलेश की बात का जवाब देते हुए अर्णिम उठा और स्टैंड पर खड़ी अपनी बाइक निकालने लगा।

“अच्छा घर पहुँच कर कॉल कर देना।”

“अबे वो तो मैं अपनी महरिया को करना भूल जाता हूँ। खैर याद रहा तो कर दूंगा।”

अर्णिम सोंच से बाहर आया और हँसते हुए खुद से ही बोल पड़ा– “ये सब उस नीलेशवा की वजह से हुआ है, अच्छा भला मैं घर लौट रहा था, कमबख्त ने दिमाग में भूत घुसा ही दिया।”

अर्णिम ने जेब से मोबाइल निकाला, थोड़ी देर बाद स्क्रीन पर दिख रहा था 'कॉलिंग नीलेश'

“हाँ भाई, घर पहुँच गया। एक बात और कहनी थी।”

“हम्म”

“भूत हमारे दिमाग में होते हैं। हक़ीक़त में नहीं।”

समाप्त!!

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

अब होनी को कौन टाल सकता है बहन

हा सुशीला। पर बेचारी ने इस उमर मे बहूत दुःख देखा... ३-३ बेटे होने के बावजूद इस खोली मे अकेले पड़ी रही है ..!

https://ComicsJunction.Stck.Me

सच कह रही हो ...अब देखो ना ॅ१ धण्टे हो गया अभी तक इसके परिवार से कोई नही आया ...ऐसा लगता है की इसके रिश्तेदार ने मूँह फेर लिया है...

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

https://ComicsJunction.Stck.Me

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

अनकही सोच

कहानी • राहुल सिन्क्लेयर

भूत प्रेत, बुरी आत्माएँ, चुड़ैले, हम में से कितने इन सब पर विश्वास करते हैं........ और अगर विश्वास करते हैं तो डरते हैं या नहीं.... ज्यादातर लोग अंदर से तो इन सब पर विश्वास करते हैं लेकिन सामने खुल कर इस बारे में बात नहीं कर पाते हैं।

खैर छोड़िये यह सब अब आते हैं अपनी कहानी पर, नाम कुछ सोचा नहीं बस ऐसे ही लिखने बैठ गया हूँ। अब पहली बार कुछ लिख रहा हूँ तो जाहिर सी बात है कि गलतिया भी होगी इसलिए उन होने वाली गलतियों की पहले से ही माफी मांग रहा हूँ।

कहानी शुरू होती है दिल्ली के एक छोटे से परिवार से अविनाश उसकी पत्नी स्वरा और इनकी दो लड़कियां अनू और रेनू क्रमशः ५, ६ वर्ष। अविनाश जो कि पुरातत्व विभाग में कार्यरत है, अक्सर काम के सिलसिले में अलग अलग शहरों में ट्रांसफर होता रहता था और सारे परिवार को इसके परिणाम भुगतने पड़ते थे। सबसे ज्यादा असर बच्चों पर पड़ता था इसलिए उनके दोस्त सिर्फ उनके
माता–पिता ही थे। इसके बावजूद परिवार बहुत ही खुश था। एक दिन शाम को अविनाश काम से घर लौटा ".. अरे सुवि, कहां हो भई ... ??"

सुवि, (चिल्लाते हुए) "... आई यह बच्चे ना बहुत शैतान हो गये हैं।... "

पानी देते हुए "... और आज का दिन कैसा रहा... "?

लबीं सांस भरते हुए अविनाश ने कहा "... एक और ट्रांसफर..."।

"...इस बार कहां..."? सुवि ने पूछा।

कुलधारा राजस्थान,

सामान पैक हुआ और दो दिनों में परिवार कुलधारा में पहुंच गया और एक पुराने से दिखने वाले बंगले के सामने आकर रुक गया।

"... छी!!!! इतना गंदा घर, पापा हमें नहीं रहना यहां..." मुह बनाते हुए छोटी लड़की ने कहा।

अविनाश समझाते हुए "...अरे मेरी प्यारी सी राजकुमारी पापा अभी सब साफ कर देंगे और यहा आपको अपना एक अलग कमरा भी मिलेगा. .."

आखिरकार सब घर में सामान सेट करके थके होने के कारण लेटते ही सो गये। रात के करीब २:३० बजे होंगे सुवि की आंख खुली पानी पीने के लिए तो वो किचन में आई कि अचानक किचन की खिड़की पर कुछ आहट महसूस हुई, हिम्मत करके आहट की वजह जानने के लिए खिड़की के पास गयी और खिड़की खोल कर देखी तो पाया कुछ टहनियां हवा चलने पर खिड़की से टकरा रही थी। चेन की सांस ली सुवि ने और खिड़की बदं करके पानी पीने लगी।

"... ठक ठक ठक..."

सुवि चौंकी इस बार आवाज खिड़की के बाहर से नहीं बल्कि घर में ही आ रही थी। दो – तीन बार आवाज हुई और सुवि ने कोशिश करी के आवाज की सच्चाई जान सके अंत में थककर वापस कमरे में आकर सो गयी।

अगली सुबह सुवि चाय के साथ अविनाश को जगाती है, अविनाश आधी खुली आंखों से देखते हुए "... गुड मॉर्निंग डार्लिंग, कैसी नींद आई नये घर में?..."

सुवि "... अजी नींद क्या खाक अच्छी आई, रात को पता नहीं कौन ठक ठक कर रहा था। आपको उठाया नहीं क्योंकि आप थके हुए

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

थे और सुबह आपको काम पर जाना था..."
अविनाश"... अच्छा कहो तो आज छुट्टी कर लूँ?..."
सुवि "... नहीं जी आप तो काम पर ही जाओ मुझे तो लगता है कि घर पूरा संभालने में सारा दिन लग जाएगा..."
अविनाश "... फिक्र क्यों करती हो मैंने पास के गांव से किसी को बुलवाया है वो घर संभालने में और सफाई में तुम्हारी मदद करेगा..."
सुवि थोड़ा सोचते हुए "... पास के गांव से क्यों बुलवाया इसी गांव का कोई क्यों नहीं आया..."
अविनाश "... अरे इस गांव के लोग पागल है बहकी बहकी बात करते हैं कि घर भूतिया है, कोई आने को राजी ही नहीं हुआ..."
सुवि शंका जाहिर करते हुए "... अवि कल रात जो आवाज मुझे सुनाई दी कहीं........"
अविनाश बात बीच में काटते हुए "... . ओह कम ऑन सुवि तुमसे कितनी बार कहूँ कि मुझे इन सब पर विश्वास नहीं है और प्लीज बच्चों के सामने यह सब बात मत करना बुरा असर पड़ता है..."
अविनाश काम पर निकल जाता है और थोड़ी देर बाद दरवाजे पर दस्तक होती है रात जैसी वही तीन बार ठक ठक ठक।
"... कौन है... "
"... कौन है वहां..."

कोई जवाब नहीं मिलने पर सुवि हिम्मत करके दरवाजे के पास आती है और डरते डरते दरवाजा खोलती है और देखती है सामने एक अधेड़ उम्र का आदमी सहमा सा खड़ा है।
"... कौन हो?? क्या चाहिए??... " सुवि ने डर पे काबू करते हुए बोला।
वो शख्स थोड़ा हिचकते हुए"... वो अविनाश साब ने बुलवाया था साफ सफाई करने के लिए..."
"... ओ हां हां अंदर आओ... " बोलकर सुवि अंदर आ गई।
"... अरे बाहर क्यों रूक गये सफाई क्या बाहर से ही करोगे अभी बहुत सारे काम बाकी है ऊपर से बच्चों की शैतानियां। अरे बच्चों संभाल कर भागो मत और घर के पास ही रहना..."
बच्चे बाहर खेलने चले जाते हैं और मजदूर सहमे सहमे कदमों के साथ अंदर आता है और साफ सफाई करने लगता है।
सुवि "... क्या बात है घर में आने में इतना डर क्यो रहे थे..."
मजदूर "... जी ऐसी कोई बात नहीं है वो इतना भव्य मकान के कभी अंदर नहीं गया इसलिए थोड़ा हिचक रहा था..."
सुवि थोड़ी कड़ी आवाज में "...सच सच बताओ क्या बात है इस गांव से एक भी मजदूर यहां काम करने नहीं आया तुम भी आये तो अंदर आने में हिचकिचाये। सच बताओ..."

मजदूर "... मेमसाहब ये घर भूतिया है बुरी आत्माएँ वास करती है यहा। सारा गांव यह बात जानता है इसलिए यहां कोई नहीं आया। हमारे बड़े बुजुर्ग बताते हैं कि जो भी यहां रहने आया वो ज्यादा दिन तक नहीं टिका या तो वह ये मकान छोड़ कर चले गए या जिंदगी। मेमसाहब आप लोग यहां से चले जाओ... " "... जितना जल्दी हो सके..."
"... हं हां हां... " हकलाते हुए सुवि ने जवाब दिया और काम में लग गई।
खैर शाम हुई, अविनाश घर आता और बाहर से ही सुवि और बच्चों को आवाजें मारता है।
"... सुवि!!!! अनू!!! रेनू!!! कहां हो सब के सब..."
सुवि भागते हुए आती है और अविनाश को चुप कराती है "... श्श्श्श्श ! धीरे बोलो जी अभी अभी बच्चे सोये है सुबह से ही मस्तियां चालू थी इनकी..."
खैर अविनाश अंदर आता है और सुवि चाय बनाकर लाती है। चाय पीते पीते अचानक सुवि बोली "... अवि हमें यहाँ कितना समय रहना होगा, कहीं और ट्रांसफर नहीं करा सकते हैं क्या?..."
अविनाश "... सुवि क्या बात है पहले मेरा जहां कहीं भी ट्रांसफर होता था तब तुम हमेशा यही कहती थी कि हम एक जगह पर शांति से

https://ComicsJunction.Stck.Me

क्यों नहीं रह सकते हैं, और आज एकदम से ऐसा क्या हुआ कि तुम्हारा एक ही दिन में यहां से जाने का मन हो रहा है। ऐसा हुआ क्या?? कहीं उस मजदूर ने तो तुम्हें कुछ नहीं कहा। बोलो जवाब दो सुवि ..."

सुवि डरते हुए ".... जी वो मजदूर बोल रहा था कि यहां बुरी आत्माओं का वा....."

".... ओह शट् अप सुवि तुम फिर वही बकवास लेकर शुरू हो गईं तुम्हें पता है ना मुझे यह सब पसंद नहीं ..... "

अविनाश बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि अचानक बच्चों के कमरे से चीख सुनाई दी। दोनों भागते हुए बच्चों के कमरे में घुसते है तो देखते हैं कि रेनू बैड पर बैठी है और टकटकी लगाये दरवाजे के पीछे वाली दीवार पर देख रही है।

"... रेनू मेरी बेटी क्या हुआ..."

रेनू ने कोई जवाब नहीं दिया बस वहीं दीवार पर एकटक देखे जा रही थी और डर रही थी।

अविनाश "... बेटा पापा के पास आ वहां क्या देख रही है..."

"... वो वहां पर है... " हाथ से उसी दीवार पर इशारा करते हुए रेनू बोलती है।

अविनाश और सुवि एकसाथ उस ओर देखते हुए बोले "... कौन है रेनू? मस्ती करने का यह कोई टाइम है। सो जा चुपचाप अब और मस्ती नहीं..." बोलते हुए जैसे ही कमरे से जाने को हुए अचानक रेनू चीखी...

"... मम्मा वो आपके ठीक पीछे है... "

इस बार सुवि गुस्से में आकर रेनू के सामने कुर्सी पर बैठ गयी और बोली

".... चल आज तेरी सारी मस्ती निकालती हूं। बता जो मेरे पीछे खड़ा है वो दिखता कैसा है और अभी वो बोल क्या रहा है। सच सच बता रेनू नहीं तो मार खायेगा... "

रेनू बताती है "... मम्मा वो आपके पीछे खड़ी है सफेद रंग का कपड़ा पहने हुए जो बड़ा ही गंदा है बदबू भी आती है। उसका चेहरा नहीं दिखाई देता क्योंकि उसने चेहरा बालों से ढका हुआ है और वो अभी कह रही है कि यह घर उसका है और वो हम सबको मार देगी।..."

इतना कहते ही कमरे का दरवाजा जोर से बंद हुआ "... भड़ाक्क..."

सारे उस रात एक ही कमरे में सोये, सोये भी क्या सुबह होने का इंतजार करने लगे।

"... मम्मा हम सब क्या मर जायेंगे... "

बच्चों ने मासूमियत से पूछा

"... मेरे होते हुए मेरे बच्चों तुम्हें कुछ नहीं होगा मैं वादा करती हूं..."

सुवि ने दोनों बच्चों को अपने सीने से लगा लिया उसकी आँखों में आँसू आ गए। जैसे ही सुबह हुई अविनाश ने यह फैसला लिया कि रेनू को डाक्टर के पास लेकर जायेंगे उसे अभी भी उन बातों पर विश्वास नहीं था।

खैर डाक्टर के पास रेनू को ले जाया गया जहां डाक्टर ने कहा कि चिंता की कोई बात नहीं है इस उम्र में बच्चों की कल्पना शक्ति चरम पर होती है। अपने खिलौनों से बातें करना गुड्डे–गुडियों की शादी करवाना इत्यादि यह सब कल्पना शक्ति होती है बच्चों की।

"... अच्छा और दरवाजे का उसी टाइम जोर से बदं होना कि मानो किसी ने पटका हो। उसे भी आप कल्पना शक्ति ही कहेंगे ना डाक्टर.. .. "

अविनाश सुवि के कान में ".... चुप करो तुम अपनी वही फालतू की बकवास..."

बेचारी सुवि मन मारकर बैठी रहती है। डॉक्टर के पास से घर को आते हुए रास्ते में एक मंदिर दिखाई दिया

सुवि "... गाड़ी रोको अवि.."

"... अब क्या हुआ सुवि... "

अवि थोड़ा झुंझलाहते हुए।

"... मुझे वो (इशारा करते हुए) उस मंदिर में रेनू को लेके जाना है..."

अविनाश कार मंदिर के पास खड़ी करके बोलता है कि "... जाओ हो आओ मैं यहीं रुकता हूँ..."

"... अवि प्लीज... "

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

बात बीच में ही काटते हुए अवि बोलता है

"... सुवि तुम्हें पता है ना कि मैं भगवान् वगैरह में विश्वास नहीं करता, और शादी के वक्त किया गया समझौता तुम कैसे भूल गईं कि कभी भी मुझे बदलने की कोशिश नहीं करोगी..."

मंदिर की सीढ़ियों पर बैठे हुए एक बुजुर्ग बाबा यह सब देखकर हस रहे थे फिर हसते हसते बोले

"... अरे बेटी भगवान् के घर किसी को जबरदस्ती नहीं लाया जाता है। जब उसकी आत्मा अंदर से आवाज देगी तब यह खुद आयेगा बेटी... "

खैर मंदिर में पूजा करने के बाद जब सुवि जैसे ही बाहर आती है बाबा आवाज देते हैं

"... बेटी पहले कभी तुम्हें देखा नहीं नये आये हो क्या.."

"... जी!!! बाबा वो पास के गांव कुलधारा में सबसे बड़ा घर है हम वहीँ रहने आये हैं।... "

कुछ देर सोचने के बाद बाबा बोले बेटी वो घर किसी भी प्रकार छोड़ दो। वहां बुरी शक्तियों का वास है वहां कोई भी नहीं जाता। अच्छा जब से तुम लोग उस घर में रह रहे हो कभी कुछ अजीब घटित हुआ या किसी के ना होने पर भी मौजूदगी का एहसास..."

सुवि सारी घटनाएं बाबा को बताती चली गई और सारी बात सुनकर बाबा

"... बोले बेटी बिल्कुल भी नहीं घबराना और अपना दिल पक्का रखना, चाहे कुछ भी हो पर तुम कमजोर मत पड़ना। बुरी शक्तियाँ सीधे हमला नहीं करती तीन चरणों में वो खुल कर सामने आएगी... "

"... बाबा वो तीन चरण क्या है..."

"... 1 दस्तक देना

2 खुद की मौजूदगी का एहसास दिलाना

3 हावी होना

"... बाबा हमारी मदद करो... " सुवि ने कहा

"... बेटी उस पापशक्ति को बांधने की सामर्थ्य मुझमें नहीं है लेकिन यहां से ३० कोस दूर जंगल में बाबा अघोरनाथ साधना करते हैं कल भोर होते ही उनके पास चले जाना वह अवश्य ही तुम्हारी समस्या का समाधान करेंगे..."

बाबा अभिमंत्रित धागा दोनों बच्चों के गले में डाल देते हैं और परिवार घर पर वापस लौट आता है। उस रात परिवार के साथ कुछ नहीं हुआ सुबह किसी तरह अविनाश को बाबा अघोरनाथ के पास ले चलने को राजी कर लिया।

कार जंगल के बाहर खड़ी कर के सुवि, अविनाश और बच्चे बाबा के पास आने लगे।

बाबा अघोरनाथ चिता की राख से नहाया हुआ गठीला शरीर, बड़ी हुई जटाये जो मानो पेड़ की शाखाओं सी प्रतीत होती थी। गले और हाथों में रुद्राक्ष की माला और धोती। साधना में लीन व्यक्तित्व में देवत्व बहुत ही आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी थे।

"... बाबा प्रणाम... " सुवि ने बाबा का ध्यान भंग किया और बिना कुछ बताये बाबा उनकी सारी परेशानियों को समझ गये।

कुछ देर मौन रख कर उनके मुख से केवल एक ही शब्द निकला"... स्वर्णा ..."

"... स्वर्णा?... " अविनाश और सुवि दोनों ने एक साथ चौककर कहा।

म्दक व चिंतज वदम

"... हां सुवर्णा..." बुझी आवाज में बाबा ने कहा।

".... आखिर ये सुवर्णा है कौन और क्यों मेरे परिवार के पीछे पड़ी हुई है? क्या चाहती है वो हमसे... "

"... तुम सबकी जान चाहती है वो!!!!!..."

बाबा आगे बताते हुए "... आज से लगभग १५० वर्ष पूर्व जहां तुम लोग आज रहते हो वो कभी कुलधारा गांव के जमींदार का घर था। जमींदार उदयभान अपनी पत्नी सुवर्णा के साथ खुशी खुशी रहता था। सारा गांव सुखी था, लेकिन सिर्फ तब तक जब तक उन्हें सुवर्णा की असलियत मालूम नहीं चली। दरअसल सुवर्णा शैतान की उपासक थी और यह बात कोई भी नहीं जानता था उसने उदयभान से शादी भी सिर्फ बच्चे के लिए करी

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

थी जिससे वह बच्चे की बलि शैतान को दे कर शक्तियां हासिल कर सके क्योंकि पूरे गांव में एक यही परिवार ऐसा था जो कि उच्च जाति का था घर भव्य होने के कारण वह अपने अनुष्ठान लोगों की नजरों में आए बिना आराम से कर सकती थी। देर–सवेर इस रहस्य से भी पर्दा उठना था लेकिन जरा देरी से उठा। खैर प्रसव का समय आया वो भी ठीक उसी दिन जिस दिन उदयभान काम के सिलसिले में पास के गांव में गया हुआ था। बच्चे का जन्म हुआ और उसी समय उसकी बलि खुद उसकी माँ ने दी। शक्तियां पाने का पागलपन उसके मातृत्व पर भारी पड़ गया। सोचता हूँ तो आंखों से आंसू छलक पड़ते हैं यह सोचकर कि कितना कठोर ह्रदय था उस औरत का माफ करना मां शब्द का प्रयोग नहीं कर पा रहा हूं। खैर उदयभान जब वापस अपने घर आता है तो उसे यह बताया जाता है कि शिशु मृत पैदा हुआ। बलि देने के ठीक ५ दिन बाद अमावस्या थी सुवर्णा को उसी दिन शैतानी शक्तियां मिलनी थी तो वो घर के पिछवाड़े में छुपकर अनुष्ठान करने लगी और कहने लगी

"... हे शैतान!!!.... "

"... अपने बच्चे की बलि दी है मैंने तुझे बदले में मुझे शक्ति दे... "

और साथ साथ मंत्र बुदबुदा रही थी इस बात से बेखबर की उदयभान और कुछ गांव वाले ये देख रहे थे। उदयभान की आंखों में आंसू और खून एकसाथ उतर आये थे। सबके हाथों में कुल्हाड़ी और मशालें थी सभी एक साथ चिल्लाते हुए

"... मारो इसे... "

"... बचने ना पाए..."

"... हत्यारिन चुड़ैल है यह... "

सुवर्णा ने जब यह सब देखा तो गुस्से में आंखें लाल हो चुकी थी, हो भी क्यों न आखिर उसके अनुष्ठान में विघ्न जो पड़ चुका था। खैर लोगों के कोप से बचने के लिए सुवर्णा भागी और धीरे–धीरे पूरा गांव उसके पीछे। जिसको जो हथियार मिला लेकर गांव की भीड़ का हिस्सा बन गया। अंततः जब सुवर्णा को एहसास हुआ कि अब वह बच नहीं सकती तो वो एकाएक रुक गयी गांव वाले ५० कदम दूर ही होंगे कि उसने अपनी साड़ी उतारी फंदा बनाकर गले में डाला और चीख कर बोली

".... जब तक शक्तियां प्राप्त नहीं कर लेती मैं यहां से नहीं जाऊंगी... "

फिर उसने आसमान में देखा मानो कहा रही हो कि अधूरी इच्छा लेकर जा रही हूँ। अचानक तेज़ हवाओं ने चलना शुरू कर दिया और एकदम से बिजली चमकी।

उस चमक में सुवर्णा का पेड़ पर झूलता शरीर, बाहर निकल चुकी आंखें और जुबान साफ नजर आ रही थी।

यहां तक कि कहानी कैसी लगी बताइएगा जरुर

"... अब हम क्या करें बाबा!... "

सुवि ने हाथ जोड़कर कहा। काफी देर तक खामोश रहने के बाद बाबा ने चुप्पी तोड़ी।

"... समय के साथ सुवर्णा बहुत ही ज्यादा शक्तिशाली होती जा रही है मुझे नहीं पता कि मैं उससे मुकाबला कर भी सकूंगा या नहीं, लेकिन हां अंतिम सांस तक तुम्हारी मदद अवश्य करूंगा। बस तुम लोगों को अंदर से कमजोर नहीं होना है।... "

बाबा कुछ आवश्यक वस्तुएं लेकर अविनाश और सुवि के साथ घर के लिए रवाना हो जाते हैं। आखिरकार जैसे ही घर के बाहर कार रुकी

"... मम्मा मुझे वॉशरूम जाना है। जल्दी!!!"...

रेनू ने कहा तो सुवि रेनू को लेकर अंदर जाने लगी अविनाश नाश भी पीछे पीछे गया। बाबा बाहर खड़े घर को निहार रहे थे की उनकी नजर ऊपर कमरे की खिड़की पर गयी जहां उन्होंने वही सुवर्णा का साया देखा और मन में सोचा कि "... हे प्रभु! कुछ अनिष्ट ना हो जाए..." और भागे घर की ओर।

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

इतने में अविनाश की चीख सुनाई दी "... बाबा जल्दी आइए सुवि को कुछ हो रहा है..."
बाबा अंदर आए तो पाया कि अविनाश ने सुवि के पैरो को पकड़ा हुआ है इसके बावजूद सुवि का शरीर जमीन पर घिसटता जा रहा है मानो कोई उसके बाल पकड़ कर खीच रहा हो। अविनाश सुवि को संभालने में असमर्थ हो रहा था कि इतने में बाबा पास ही पड़ी एक कैची से सुवि के बाल काट देते हैं। सुवि बेहोश हो जाती है अविनाश पसीने में तर, बच्चे एक कोने में आपस में लिपटे हुए दहशत से कांप रहे थे। इधर इससे पहले सुवि होश में आकर फिर बेकाबू हो बाबा ने अविनाश को इशारा किया कि वह सुवि को कुर्सी पर बैठा कर रस्सी से बांध दे। अविनाश सुवि को कुर्सी पर बैठा कर बांध देता है उधर बच्चे भी डरे सहमे एक दूसरे से लिपट कर कोने में बैठे थे। थोड़ी ही देर में सुवि को होश आता है

".... अवि क्या हुआ मुझे ऐसे बांध कर क्यों रखा है और आप सब मुझे ऐसे घूर कर क्यो देख रहे हो।.....
अविनाश ने एक कदम ही बढाया था कि बाबा गरजे
"... ठहर जा मूर्ख! देखता नहीं की यह अभी भी दुष्टआत्मा के प्रभाव में है... "
बोलते हुए बाबा ने कोई मंत्र बुदबुदाया और अपने झोले में से अभिमंत्रित जल निकालकर उसके ऊपर छिड़का। सुवि हल्की सी बैचेन हुई लेकिन इसका अनदेखी करते हुए अपनी कलाइयों को मोड़कर घुमाकर जैसे तैसे बस आजाद होने की कोशिश कर रही थी। जब दूसरी बार बाबा ने अभिमंत्रित जल छिड़ाका तो इस बार उसने प्रतिक्रिया ज्यादा दी। अपने चेहरे को एक जोरदार झटका दिया और सिर नीचे करके बड़बड़ाने लगी, बाल चेहरे पर आ गए थे इसलिए चेहरा नहीं दिखाई दे रहा था।
"... सु.... सुवि तुम ठीक हो...."
अविनाश ने सुवि के पैरों के पास बैठ कर पूछा।
"... ह.... हफ्फ् कोई नहीं बचेगा हफ्फ् ..."
"... यह क्या बहकी बहकी बातें कर रही हो... "
बोलते हुए अविनाश सुवि के चेहरे से बालों को हटाता है और चेहरा देखते ही दूर उछल कर गिर जाता है। आंखें सुर्ख लाल, चेहरे पर जगह जगह दरारें, बिखरे हुए बाल और वहशीपन से भरी हुई हसी।
"... अवि...! अवि डार्लिंग अपनी सुवि के पास नहीं आओगे..."
आवाज में दो लोगों की ध्वनि साफ पता चल रही थी। इधर बाबा ने इस बार अभिमंत्रित जल के साथ साथ कुछ राख भी उस पर फूंकी जिससे एक बार तो सुवि चिल्लाई लेकिन उसके बाद जो हुआ अविनाश की तो आंखें फटी रह गईं। जिस कुर्सी से सुवि को बांधा तो वो कुर्सी सुवि समेत बीच हवा में झूलने लगी फिर कुर्सी उल्टी चक्कर लगा कर सीधी हवा में लटकने लगी।
"... हर्रररररर!!! मरेंगे सब के सब हाहाहा "...
अटटाहस ऐसी भयानक कि अच्छे अच्छो का खून जमा दे। अचानक तेज आवाज के साथ कुर्सी के परखच्चे उडते है और सुवि पर आकर बच्चों की तरफ आती है, चक्रासन की मुद्रा में चलते हुए इतनी ज्यादा भयानक लग रही थी कि मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता, आप खुद ही अंदाजा लगा सकते हैं। तभी बाबा चिल्लाए
"... बच्चों से दूर हट दुष्टा..."
कहकर बाबा और अविनाश उसके दोनों पैर पकड कर पीछे खींचने की असफल कोशिश करते हैं। तभी दोनों को एक अतिमानवीय शक्ति से भरपूर धक्का लगता है जिसके परिणामस्वरूप बाबा सामने एक अलमारी के पास गिरते हैं और अलमारी सीधा बाबा की टांगों पर। बाबा चिल्लाकर बेहोश हो जाते हैं संभवतः उनकी टांगे टूट गई थी। इधर अविनाश का हाल भी कुछ

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

खास ठीक नहीं था, जरा भी हिलने में असमर्थ था किंतु होश में था।
"…. लुकै छुपै जानौ मक्कयौ कौ दानौ हौ हौ हौ… "
चेहरे पर ऐसा वहशीपन की उफफफफ!
"… सुवि होश में आओ तुम्हारे बच्चे हैं वो, जिन्हें तुम दुनिया में सबसे ज्यादा प्यार करती हो मेरे से भी ज्यादा। सुवि बच्चों के बिलकुल पास आ चुकी थी अविनाश की बात सुनकर सुवि एक पल को ठिठकी मानो सुवि और सुवर्णा के बीच अंतरदव्ंद चल रहा हो। खैर सुवर्णा जो कि सुवि पर पूरी तरह से हावी थी वार बस करने ही वाली थी कि
अविनाश "….. नहीं…" और आंखें बंद करके भगवान् से प्रार्थना करता है कि
"… हे भगवान्! पूरी जिंदगी मैंने कभी तेरे अस्तित्व को नहीं माना लेकिन आज सच्चे मन से अपने परिवार की सलामती मांगता हूं… "
तभी रेनू की आवाज ने अविनाश का ध्यान भंग किया।
"… मम्मा सॉरी अब हम कोई शैतानी नहीं करेंगे आप प्लीज ठीक हो जाओ आपने हमसे प्रॉमिस किया था कि आपके होते हुए हमें कुछ भी नहीं होगा…"
"… हमें कुछ नहीं होगा ना मम्मा… "
"… प्लीज बोलो ना मम्मा…"

रेनू के मासूमियत से कहे इन शब्दों ने सुवि को अंदर तक झकझोर कर रख दिया। यह साफ देखा जा सकता था कि सुवि कितनी ज्यादा मानसिक पीड़ा से गुजर रही थी। दोनों में खूब कशमकश हुई और आखिर में सुवि के गले से कानो को फाड़ देने वाली चीख निकली और एक धुंधला साया दीवार तोड़कर बाहर जाता हुआ दिखाई दिया।
"… धममममै… "
की आवाज हुई और सुवि जमीन पर गिर गई। कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा फिर कराहने की आवाज आई
"…. आहैं…"
"…. रेनू, अनु मेरे पास आओ मेरे बच्चों…."
दोनों बच्चे मां से लिपट कर रोने लगते धीरे–धीरे अविनाश भी पास आता है फिर चारों पहले खूब रोते हैं फिर एक दूसरे के आंसू पोंछ कर हसने लगते हैं। बाबा को अस्पताल पहुंचाया जाता है और कुछ दिनों के बाद अविनाश भी बिलकुल ठीक हो जाता है। परिवार में खुशियां वापस आ जाती है और सबसे बड़ा बदलाव अविनाश में आया वो अब भगवान् पर विश्वास करने लगा था। अब परिवार ने फैसला किया कि वह दिल्ली में रहेंगे तो चल पड़े सफर पर सभी खुश थे सिर्फ सुवि खिड़की की तरफ मुंह करके कुछ सोच रही थी।
"… क्या हुआ सुवि… "
सुवि खिड़की की तरफ मुंह किये हुए
"… कुछ नहीं जी बस ऐसे ही…"
हल्के से गुनगुनाते हुए
"… लुकै छुपै जानौ… "
"… हौ हौ हौ…"
कहानी समाप्त ।।

प्रथम प्रयास कैसा लगा जरुर बताइयेगा। जानता हूँ कि कहानी के अंत को लेकर आप सबके काफी सवाल होंगे पर दोस्तों कुछ बातें राज ही रहने दें। जल्द ही मिलूंगा अगली कहानी के साथ।।

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

वो रात

रात का समय मै रास्ते में था, घर आ रहा था।
अचानक मोसम ख़राब हो गई।
तूफान और बारिश शुरु हो गई।
सुनसान रास्ता, अँधेरा घनघोर।
मेढ़क की टर्र टर्र , बारिश का शोर।

अचानक एक चीख मेरे कानो में पड़ी।
मै गाड़ी से उतरा , देखा एक लड़की थी खड़ी।
स्वेत वस्त्र पहने, चेहरा बालो से ढका।
वो मेरे करीब आई , मुझे देखा और मुस्कुराई।
उसे देखकर मेरी सांसे गले में अटक गई।

चेहरा रक्त रंजिस , हेवानियत थी समाई।
मुह खून से सना,आँखों में अँधेरा समाई।
भय से जड़ हो गया , कुछ नही दिया दिखाई।
सर मेरा घुमने लगा,कुछ समझ न आई।

होश जब आया,मै एक गुफा में पड़ा था।
चारो ओर हड्डियो का ढांचा पड़ा था।
भयानक जानवरो की आवाज गुंज रही थी।
डर के मारे दिल की धड़कन बड़ रही थी।

तभी वो लड़की चलकर आई मेरे पास,
तेरे खून से बुझेगी अब मेरी प्यास।
पैर कापने लगा,मोत सर में नाचने लगा।
साँस मेरी अटक गई, अंधेरा चने लगा।

हिम्मत करके सम्भाला ,मन में होसला आया।
मोका देख जी जान से मैने दोड़ लगाया।
घर पहुंच कर ही राहत का मैने साँस लिया।
जान बचाने के लिए भगवान को धन्यवाद किया।

सुबह भुला नही मै हर बात,
हमेशा याद रहेगी मुझे वो रात........

-कमल पटेल

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

बारह सिंघा

समीक्षा • मनीष मिश्रा
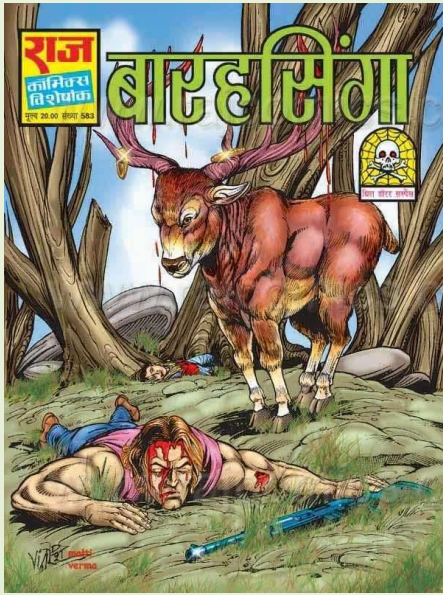
लेखक – तरुण कुमार वाही
परिकल्पना – विवेक मोहन
चित्रांकन – अशोक भड़ाना
सुलेख – राजेश गवालवंश
रंग – सुनील पाण्डेय
संपादक – मनीष गुप्ता

राज कॉमिक द्वारा थ्रिल हॉरर सस्पेंस सीरीज को दोबारा स्थापित करने के प्रयास में यह कॉमिक एक अच्छा कदम था। कॉमिक सस्पेंस को सही मायने में दिखाने वाली ये एक अच्छी कॉमिक थी। कहानी शुरू होती है नीलगिरि के जंगलो से जहाँ एक बारहसिंघा लोगों पत हमला करना शुरू कर देते है। लोगो पर हमला करना तो ठीक था पर एक बारहसिंघा किसी की जान ले तो सोचने की बात होती है। इसी रहस्य पर बुनी गई इस कॉमिक की कहानी। कहनी के अंत तक रहस्य बना रहता है की आखिर बारहसिंघा कहाँ से आया और लोगो की जान क्यों ले लेता है। रहस्य और गहरा हो जाता है जब बारहसिंघा समझदारी के साथ हमलो से बचने भी लगता है। जू से भागने के बाद बारहसिंघे का ज्वैलर शॉप पर हमला सोचने पर मजबूर करता है कि एक बारहसिंघा इतना सोच समझ कर कैसे हमला कर सकता है।

कहानी में कई कमजोर पक्ष है पर रहस्य बने रहने के कारण वो सामने नही आ पाये। कहानी में हड्डियों से बने महल और उसका होटल बनाया जाना, कबीले और डाकुओं की लड़ाई में लोगो का मारा जाना, हड्डियों का महल बनवाने वाले राजा की सनक उसका प्रेत ऐसे कई पक्ष थे जिनको उभार कर कहानी को और भी मजबूत बनाया जा सकता था। इससे कहानी की लम्बाई भी बढ़ सकती थी और उसका रोमांच भी बन जाता। पर यह सिर्फ मेरी धारणा है।

कहानी का मुख्य किरदार बारहसिंघा ही है, जो कहानी की शुरुआत से उत्सुकता बनाये रखता है। पहले दृश्य से ही वो आ जाता है और आखिर तक रोमांच बनाये रखता है। उसकी समझदारी सबको अचंभित करती है। इसके आलावा सोनाली और आर्यन दो अन्य किरदार ध्यान देने लायक थे इसके सिवा कोई खास किरदार नही है।

चित्रांकन ठीक ही पर इसका चित्रांकन सिर्फ एक रहस्य कथा तक ही सिमित है। कोई भी चित्र दर पैदा नही करता है। चित्रांकन का स्तर और बेहतर हो सकता था।

रंगसज्जा कुछ खास नही है तड़क भड़क वाले चमकदार रंग कहानी की मांग के अनुसार नही है। रंग अगर डार्क होते तो शायद और इफ़ेक्ट पैदा करते।

शब्दांनकन कुछ खास नही है। संवाद बहुत ही निम्नस्तरीय है। कोई भी संवाद बहुत ही प्रभावी नही है। न ही कॉमिक पढ़ने के बाद याद ही रखने वाले हैं।

ओवरऑल एक अच्छा प्रयास पर इसे और बेहतर किया जा सकता था।

https://ComicsJunction.Stck.Me

निस्तेज निर्लज्जता

ऋषभ आदर्श

कवि रघुवीर सहाय की कविता "औरत की ज़िन्दगी" की पंक्तियाँ हैं

"कई कोठरियाँ थीं कतार में
उनमें किसी में एक औरत ले जाई गई
थोड़ी देर बाद उसका रोना सुनाई दिया

उसी रोने से हमें जाननी थी एक पूरी कथा
उसके बचपन से जवानी तक की कथा"

दो लाख सत्ताईस हज़ार तीन सौ चौरानबे...ये कोई बहुत भारी संख्या नहीं है ना ही पकड़ा गया कोई कालाधन है!मगर ये अपने आप में स्याह ज़रूर है...ये संख्या साल २०१५ में हुए महिलाओं पर अत्याचारों की पुलिस में हुई रिपोर्टों की संख्या है!!

इसमें कोई आश्चर्य नहीं होगा की भारत में इससे ज्यादा ही महिलाओं पे अत्याचार हुए होंगे..निश्चित रूप से हुए होंगे क्योंकि, पुरुष दम्भ के आधिपत्य में हर महिला दहलीज़ लांघकर, अपनी दुर्दशा के ख़िलाफ़ न्याय की गुहार कहाँ लगा पाती है?

डर लगा? नहीं? ऐसी दशा पुरुषों की होती तो ज़माना सर पे उठा लिया गया होता...दबे कुचलों सी दशा वाले हर मनुष्य का यही हाल होता है...ये सोच कर हम आँखें मूँद लेते हैं!

मैं ये बातें यहाँ क्यों कर रहा हूँ, ये सोच अवश्य दिमाग में आई होगी। बताता हूँ; हम क्यों डरते हैं? किससे डरते हैं?
उस चीज़ से जो दिमाग में घर कर जाती है...अक्सर अँधेरे में या सुनसानियत में भी एक ऐसा ख्याल आता है की अरे वो क्या खड़खड़ाया...या अरे वो कैसी परछाई है?? मन सहम सा जाता है नई? अब ज़रा ध्यान दीजिये उस लाचार महिला पे, जिसे ये भी पता नहीं होता की ऐसी सुनसान जगहों पे चलना भर कितना सुरक्षित है! और तो और अधिकतर मौकों पे उनका उस अत्याचारी की आहट, परछाई यहाँ तक की नाम और सूरत से भी परिचय रहता है! उनके डर को अगर महसूस करेंगे तो अपना ये डर भूत प्रेत सब फीका सा नज़र आएगा।

इस बार मैगज़ीन की थीमों में से एक है डर/हॉरर, तो मैंने सोचा की क्यों न समाज में व्याप्त एक अघोषित किन्तु प्रासंगिक भय को दिखाया जाए।

हर कोई इस डरने के मुद्दे को भूत प्रेतों जैसी अतिकाल्पनिक चीज़ों से जोड़ देता है,लेकिन अपने पड़ोस से आ रही चीखों (सच्ची चीखों) को नज़रअंदाज़ कर देता है; और बस ढूंढता रहता है किस्सों, कथाओं और किवदंतियों में...और ज्यादा मन करे तो फिल्मों में! मशीन जनित दृश्यों को देख कर हम कृत्रिम डर पा लेते हैं, पर एक बार अगर उन सिसकियों, उन चीखों के पीछे के दर्द को जानने या

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

कम से कम अनुभूति करने की भी कोशिश करेंगे तो असली डर से हमारा साक्षात्कार होगा।

जो लड़की बिना सोचे समझे, रस्मों के सहारे एक रिश्ते की डोर थाम एक अनजान घर में आती है...ताक पर होते हैं सपने, ख़्वाब, करियर और मन में होती हैं आशाएं; कुछ भी तो तय नहीं होता। काजल की कोठरी में रहने वाले हर किसी के कपड़ों में कालिख लगती ही लगती है...केवल पुरुष ही नहीं महिलायें भी इन अत्याचारों में अक्सर भागीदार बनती हैं, क्या संवेदनाओं की मृत्यु सम्भव है? इस हद तक??

ताज्जुब होता है; खैर हम तो स्तनपान कराती माताओं को भी एक सम्मान की दृष्टि या सुरक्षा का माहौल नहीं दे पाते, तो बात ही क्या हो! नज़रों से नंगा कर देने वाले हमलोग ही तो हैं!

क्यों नही डरते हमलोग? इतनी अनभिज्ञता कहाँ से पैदा करते हैं? जिस लाखो करोड़ों सभ्यता और संस्कृति का दम्भ हम भरते हैं, उसमे क्या महिला को सबसे बड़ी शक्ति नहीं माना गया है? क्यों हम महिलाओं की किसी भी बर्बाद हालत को उनकी नियति मानते हैं और उनकी हर सफलता को ईर्ष्या?

क्यों अक्सर हर लड़की की कहानी सिसकियों की ज़ुबानी ही आती है? कई मकानों से या पड़ोस से आपने भी तो सुनी ही होंगी चीत्कारें! तो क्यों नहीं मदद के लिए गए आप? आपकी एक दस्तक से शायद उस औरत का स्वाभिमान जाग जाता...शायद रोने के बजाय उसकी आवाज़ बुलन्दी से निकलती... शायद उसकी किस्मत ही बदल जाती।।

होने को तो बहुत कुछ हो सकता है...ज़रूरत है तो हमें सजग बनने की; इस जान बूझ कर ओढ़े गए "अनजान बन जाने वाली चादर को हटाने की"; क्या पता आपका एक सहानुभूति का स्वर किसी के लिए सम्बल बन जाए।।

ज़रा सोचिये...भयावह परिस्थिति को पहचानिये...डर महसूस करिये!! उस आधी दुनिया के लिए जिसे बस आधी कहते हैं हम मानते नहीं...वो जननी हैं, आधी नहीं आदि शक्ति स्वरूपा हैं...हो सके तो थोडा सम्मान ही दे दीजिये।।

जय भारत माँ

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

जासूस एक्स और अँधेरे का राजा

कहानी • राम चौहान

राजनगर
जासूस एक्स और उनकी खूबसूरत सेकेट्ररी जुली 'ड्रैकुला की वापसी' नाम की मूवी देख कर लौट रहे थे।
"केसी लगी मूवी जुली आपके मुंह में?" जासूस एक्स ने अपनी सेकेट्ररी से पूछा।
("आपके मुंह में" इनका तकिया कलाम है।)

"मै तो बहुत डर गई थी जब ड्रैकुला कब्र से बाहर निकला।क्या होता अगर ड्रेकुला अब भी जिन्दा होता?" जुली बड़ी बड़ी आँखे आश्चर्य से फैलाती बोली।

"तो तुम जैसी खूबसूरत लड़कियों का खून पीता और जवान बना रहता आपके मुंह में।" जासूस एक्स कुछ इस अंदाज में बोला कि जुली की हंसी छूट गई।

अब तक दोनों ऑफिस आ गए थे।
दरवाजे पर ही एक खत रखा था, जिसे जुली ने तुरंत उठाया।
"एक बात बताइये सर।" जुली बोली
जासूस एक्स :– "पूछिये आपके मुंह में।"
जुली (मुस्कुराते हुए) "आपको ड्रेकुला से डर लगता है न?"
जासूस एक्स हड़बड़ाया। "आंय।ये किसने कहा आपके मुंह में?"
जवाब में जुली ने खत जासूस महाशय को थमा दिया।

'ये खत नही एक चैलेन्ज है।उस जासूस के लिए, जो ड्रेकुला से न डरता हो।'

जासूस एक्स(मन में) :– "अब ये कौन है जो इज्जत के साथ बेज्जती कर रहा है?"
महाशय ने खत खोला।

अंदर के अल्फ़ाज़ कुछ इस तरह थे
'" राजनगर से बाहर निकलते ही १० किमी दूर एक बन्द पड़ी हवेली है।जिसे अक्सर फिल्मो की शूटिंग के लिए किराये पर दिया जाता है।आज तक इस हवेली से जिन्दा बाहर कोई नही आ पाया है और जो आया है वो पागल हो गया और ड्रेकुला का नाम ले ले कर बेहोश हो गया।'
'"अब ये साबित करना तुम्हारा काम है कि वहाँ कोई ड्रेकुला नही है।अगर नही कर सकते तो जासूस भी किस काम के?"'
'एक आलोचक'

खत पढ़ने के बाद जासूस जी को चढ़ी गुस्सा।
(मन में) "किस करमजले की करतूत है यह?"
जुली अब भी एक्स के बोलने का इंतज़ार कर रही थी।

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

"वो क्या है न आपके मुँह में..." एक्स ने बोलना शुरू ही किया था।।
"क्या है मेरे मुंह में?" जुली ने टोका।
एक्स अचकचाया।
फिर बोला :– "नही,नही।मेरा मतलब है कि इस खत के जरिये एक चुनौती भेजी गई है इस महान जासूस को।"

"केसी चुनौती?"
जवाब में जासूस महाशय ने खत का सारा किस्सा अपनी हसीन सेकेट्री को सुना दिया।
"वाओ।" जुली बोली। "तो हम कब चल रहे हैं हवेली?"
("आंय! इसे कुछ ज्यादा ही जल्दी है ड्रेकुला से मिलने की।")
प्रत्यक्ष में बोले जासूस महाशय :/ "जल्द ही चलेंगे जुली जी।लेकिन उससे पहले कुछ तैयारियां कर ली जाये आपके मुंह में।"

''''''''''''''''''''''''

जासूस महाशय का अगला पड़ाव था पुलिस स्टेशन।
जहाँ इंस्पेक्ट घुड़पकड आराम फरमा रहे हैं।
जासूस महाशय ने जाते ही सवाल दागा।

एक्सः– "क्या बात है इंस्पेक्टर साहब।बहुत आराम हो रहा है आपके मुंह में।"
इंस्पेक्टर (हड़बड़ाकर):– "मेरे मुंह में?"
एक्सः– "अरे! मेरा मतलब है कि आप यहाँ आराम करते रह जायेंगे और वहाँ वो पापी ड्रेकुला पुरे राजनगर को निगल जायेगा आपके मुंह में.."

ड्रेकुला का नाम सुनते ही घुड़पकड की घिघ्घी बन्ध गई।फिर भी बहादुरी तो दिखानी ही थी।
"यहाँ आकर अफवाह फैलाने की कोशिश करते हो।गोली मार दूंगा।" चेहरे को भयंकर रूप देने की कोशिश की थी इंस्पेक्टर ने।

एक्सः– "अच्छा।ये बात है तो मै जा रहा हूं कमिश्नर साहब के पास।मैने सोचा था कि शायद आपको प्रमोशन की जरूरत है लेकिन..."
घुड़पकडः– "अ.. मेरी बात तो सुनो।"
एक्सः– "ठीक है।बोलिये।"
इतराने की बारी एक्स की थी।
घुड़पकडः/ "क्या सच है कि ड्रेकुला शहर में आ रहा है ?"
"इसे ध्यान से पढिये आपके मुंह में.." एक्स ने खत घुड़पकड को दिखाया।

जिसे पढ़ने के बादः–
"ये तो कोई मजाक लगता है मुझे।" घुड़पकड बोला।
एक्सः– "इसका भी पता चल जायेगा।पहले आप एक काम करेंगे क्या इस बात की सत्यता को जांचने के लिए?"
घुड़पकड(मन में) "पता नहीं अब इसकी खोपड़ी में क्या विचार आया है?"
"बोलो.."प्रत्यक्ष में बोला घुड़पकड।

जासुस महाशय अपना प्लान घुड़पकड को बताने लगे।
जिसे सुनने के बाद
इंस्पेक्टरः– "पहले मुझे शक था लेकिन अब यकीन हो गया है कि तुम पागलखाने से ही छूटे हो।"
एक्सः– "ठीक है।मै अपनी योजना कमिशनर साहब को बताता हूँ और फिर आपका प्रोमोशन गया आपके मुह में।"

घुड़पकड के दिमाग में फिर से प्रोमोशन का लालच जाग गया।
"ठीक है।मै तुम्हारी बातो में आकर अपनी जान का रिस्क लेता हूँ पर फिर भी कमिशनर साहब से इजाजत लेनी ही होगी।"
जासूस महाशय ने सहमति में सिर हिलाया।

https://ComicsJunction.Stck.Me

''''''''''''''''''

रात के 10 बजे
होटल पैनोरमा

जासूस एक्स अपनी खूबसूरत सेकेट्री जुली के साथ पहुंचे।
सूट बूट में जासूस एक्स और लंबे लाल गाउन में उनकी सेकेट्री।
होटल स्टाफ के साथ साथ मेहमानों की नजर भी उन पर चली गई।
जासूस महाशय (फुसफुसाते हुए):– "जुली अगर हम हमेशा साथ चलें तो कितना मजा आएगा न आपके मुंह में..?"
जुली (चेहरे पर मुस्कान लिये पर एक्स को डपटते हुए):– "ओवरएक्टिंग ज्यादा हो रही है तुम्हारी।"

अब तक दोनों रिसेप्शन पर पहुंच गए थे।
युवती तनिक झुककर अभिवादन करती बोली:– "मे आय हेल्प यू सर?श
एक्स:– "वो हम खुद कर लेंगे आपके मुंह में।"
युवती चौंकी। "जी।"
एक्स(हड़बड़ाकर):– "जी कुछ नहीं।एक रूम बूक है हमारे नाम से।"
"योर नेम सर?"

एक्स (सोचते हुए):– "इंस्पेक्टर साहब ने किस नाम से बुक करवाया होगा?"
जुली(एक्स को सोचता देख,जल्दी से):– "मि। एंड मिसेज कनखजूरा।"
एक्स चौंकते हुए:– "आंय।"
जुली ने आंखे दिखाकर चुप रहने का इशारा किया।
युवती ने उनका रूम नम्बर बताया।
"यहाँ सिग्नेचर करिये सर।"
एक रजिस्टर एक्स के सामने आया।
"रूम नम्बर १०३..."एक्स ने साइन किया।
उसके बाद भी वो कुछ देर रुका रहा।
जुली(धीमे से।):– "रजिस्टर रखने का इरादा है क्या?"
एक्स चौंका। "अरे नही,नही।"
एक्स ने रजिस्टर छोड़ा।
दोनों पलटे ही थे कि एक पहलवान आदमी उनके सामने आ खड़ा हुआ।
"हेलो मि। कनखजूरा।मेरा नाम अरविन्द कुकुरमुत्ता है।"
एक्स ने हाथ मिलाया।

हाथ मिलाते ही उसका चेहरा लाल पड़ गया।
(मन में) "मार डाला रे।"
(एक्स के हाथ में कुकुरमुत्ता की अंगूठी गड़ गई।)

कुकुरमुत्ता:– "वैसे आप कहाँ से हैं?"
एक्स बाद में हाथ छुड़ाकर मलता रह गया।
"अमरीका से।यहाँ वो.... "होटल के सामने की तरफ इशारा करता बोला एक्स।" सामने वाली हवेली खरीदने आये हैं आपके मुंह में.."

कुकुरमुत्ता(चौंककर):– "मेरे मुंह में?"
जुली(जल्दी से):– "बुरा मत मानियेगा।ये इनका तकिया कलाम है।"
कुकुरमुत्ता:/ "ओह्ह।कोई बात नहीं।"
एक्स(जबर्दस्ती हंसते हुए):– "वैसे आप क्या करते हैं?"
कुकुरमुत्ता:– "जी मै साइकेट्रिस्ट हूं।"
"अच्छा जी,हम भी कभी आपके यहाँ आएंगे इलाज कराने आपके मुंह में।"
हंसता हुआ एक्स और जुली अपने कमरे में चल दिये।

''''''''''''''

जुली और एक्स कमरे में पहुंचे।
जासूस महाशय ने तुरंत ही खिड़की खोली और एक टोर्च सामने हवेली की तरफ घुमाई।
"कोई नजर आया?" पीछे से जुली ने मजाकिया अंदाज में पूछा।

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

सामने से भी टोर्च की रौशनी उभरी।

जुली चौंकी। "ओह्ह इंस्पेक्टर घुड़पकड यहाँ आ चुका है।"
जासूस महाशय (इतराते हुए):– "अब इस महान जासूस का काम शुरू होता है।"
जुली:– "लेकिन नीचे केसे उतरोगे?"
एक्स ने अपने जूते दिखाये।
जुली(गुस्से में):– "मैने सैंडिल पहनी है,दिखाऊँ?"
"लेकिन तुम्हारी सैंडिल दीवारों पर नही चिपक सकती।" एक्स मुस्कुराकर बोला।
जुली आश्चर्यचकित हो उसके जुतों की तरफ देखती बोली,:– "तुम्हे ये जूते कहाँ मिले?"

"प्रोफेसर उल्टा पुल्टा ने मेरे लिए बनाये हैं।" एक्स हंसते हुए बोला।
जुली(शक भरी निगाहों से):– "बनाये या तुमने चुराये हैं।"
जासूस महाशय दांत दिखाने लगे।

कुछ ही देर में जासूस महाशय दीवारों पर चलते हुए नीचे उतर चुके थे।।

''''''''''''''''''

जासूस महाशय और इंस्पेक्टर घुड़पकड हवेली के अंदर पिछले रास्ते से दाखिल हो गए थे।
घुड़पकड के चेहरे पर पसीना बहा जा रहा था।
घुड़पकड (पसीना पोंछते हुए):– "एक बात बोलता हूं।तुम्हारे कहने पर मैंने अपनी जान का रिस्क ले तो लिया है लेकिन अगर मै मरा न तो तुम्हे फांसी चढ़वाकर रहूंगा।"
जवाब में जासूस एक्स हंस पड़े।

१ घण्टा हो गया था उन्हें हवेली की खाक छानते।
घुड़पकड:– "इतनी बड़ी हवेली में पता नहीं किस कोने में छिपा होगा ड्रेकुला?"
घुड़पकड का इतना कहना था कि अँधेरे में एक जोड़ी आँखे चमक उठी।
जासूस एक्स और घुड़पकड दोनों ने उसे देखा।
एक्स(थूक निगलते हुए) :– "यही बैठा था आपके मुंह में.."
ड्रेकुला तेजी से उड़ा।दोनों के मुह से चीख निकल गई।
दोनों बाहर की तरफ भागे :– "बचाओ.... ड्रेकुला...आया.."

''''''''''''''''''

आखिर एक्स महाशय रुके।
"अरे इंस्पेक्टर साहब हम भाग क्यों रहे हैं? पीछे तो कोई है ही नहीं।"
घुड़पकड के पास रुककर जान से जाने का वक़्त नही था।वो न रुके।
जहाँ रुके,वहाँ उनकी जीप खड़ी थी।
पलटकर देखा तो जासूस महाशय चलते हुए आ रहे थे।
घुड़पकड ने तुरंत अपनी बन्दूक निकाली।

घुड़पकड(गुर्राते हुए):– "वही रुक जाओ।"
एक्स :– "आंय! अब क्या हुआ जनाब?"
घुड़पकड:– "क्या हुआ के बच्चे।आज तेरे चक्कर में ड्रेकुला मेरा खून पी जाता और शहर की सुरक्षा खतरे में आ जाती।"
एक्स(हंसते हुए):– "कौन सा ड्रेकुला?"
घुड़पकड(गुस्से से लाल होते हुए):– "मुझे अँधा बोलता है।तेरी तो..गोली मार दूंगा।"

एक्स अपने हाथ में एक प्रोजेक्शन डिवाइस दिखाता है। "ये था आपका ड्रेकुला जनाब।"
घुड़पकड पास आया। प्रोजेक्शन डिवाइस उसने हाथ में ली।
"तुम्हे कैसे पता चला कि ड्रेकुला इसमें था?"

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

एक्स (इतराते हुए):– "आसान था।बाहर निकलते ही ड्रेकुला गायब जो हो गया। बाहर निकलने के बाद किसी भी आदमी का पीछा ड्रेकुला नही करता होगा।शर्त लगा लीजिये आपके मुंह में।"

"हम्म्म।" घुड़पकड की साँस में साँस आई।
जासूस एक्स:– "मै शर्त लगाकर कह सकता हूँ कि अंदर और भी प्रोजेक्टर्स हैं।"
"लेकिन मै अब अंदर नही जाने वाला।" घुड़पकड ने जीप स्टार्ट की।
"ठीक है।आपके कुछ करना है आपके मुंह में।" एक्स महाशय अपना प्लान सुनाने लगे।
जिसे सुनने के बाद सहमति में सिर हिलाते हुए घुड़पकड ने जीप दौड़ा दी।

''''''''''''''''''''

जासूस महाशय वापस रूम में पहुंचे तो देखा कि उनकी सेकेट्री गायब थी।
"जुली जी।कहाँ हैं आप?" एक्स ने प्यार भरी आवाज में जुली को पुकारा।
जुली कमरे में आई ।
"आ गए तुम?"

एक्स ने जब जुली की आँखों में देखा तो पाया कि उसकी आँखे लाल हो गई थी।
"आपकी आँखों को क्या हो गया आपके मुंह में?" एक्स को समझ नहीं आ रहा था कि वो क्या बोल रहा है।उसे अपनी जान(जुली) खतरे में नजर आ रही थी।
"अरे कोई बचाओ इस जांबाज़ जासूस को।" एक्स जोर से चिल्लाने लगे।
दूर कही भेड़िये गुर्राने लगे।
"वुऊऊउऊ..."

"तुम लोग रहने दो।" एक्स भेडियो से बोला।
वापस एक्स ने कमरे में झाँका तो पाया कि जुली के पीछे एक और साया खड़ा है।
"ये कौन हैं आपके मुंह में?" एक्स के मुह से निकला।
एक्स ने नजरे गड़ाई तो पाया कि "ये तो ड्रेकुला है आपके मुंह में।"

जासूस महाशय का हाथ छूट गया और वो नीचे जा गिरे।

''''''''''''''''''''

जासूस महाशय की आँख खुली तो उन्होंने खुद को किसी अँधेरे कमरे में पाया।ऐसा महसूस होता था जैसे वो किसी ताबूत में लेटे हुए हैं।

अरे हां, ये तो सच में ताबूत ही था।
जासूस महाशय ने ताबूत को धक्का देकर खोलने की कोशिश की पर उनके जैसा ककड़ी पहलवान क्या खोल पाता ताबूत।

अचानक ताबूत खुलता चला गया।
जासूस महाशय की नजरें उठी तो सामने ड्रेकुला को खड़े पाया।साथ ही जुली खड़ी थी।
ड्रेकुला के दांत चमक उठे।
एक्स (हंसने की कोशिश करते हुए):– 'रहने दो नकली ड्रेकुला जी।मैने आपको पहचान लिया है आपके मुंह में।"
"कनखजूरा..?" ड्रेकुला के मुंह से निकला।
एक्स(हंसते हुए):– "जी हां,मि। कुकुरमुत्ता। कनखजूरा उर्फ़ जासूस एक्स।"

ड्रेकुला हंस पड़ा।
"तुमने मुझे कैसे पहचाना, जासूस?"
एक्स(हंसने की कोशिश करते हुए):– "कुछ देर पहले ही।जब कुकुरमुत्ता और ड्रेकुला ने एक ही अंगूठी पहन रखी थी जो तुमने अब भी पहन रखी है आपके मुंह में..."

https://ComicsJunction.Stck.Me

कुकुरमुत्ता की नजर अंगूठी पर गई। "ओह्ह, जल्दबाजी में भूल गया था मै।"
"लेकिन अब तुम्हारी कब्र यही बनेगी जासूस।" कुकुरमुत्ता हंसा। उसने वापस ताबूत बन्द करने की कोशिश की।तभी आसपास ढेर सारी लाइट्स जल गई।कुकुरमुत्ता ने नजरें उठाई तो आसपास ढेर सारा पुलिसबल मौजूद था।

"ये लोग यहाँ कैसे?" कुकुरमुत्ता के मुंह से निकला।
एक्स महाशय बाहर निकलते बोलेः– "मैने बुलाया है।"
कुकुरमुत्ता उसे घूरकर देखता रहा।
एक्सः– "और हां,इस हवेली की तलाशी लीजियेगा।कई टन विस्फोटक सामग्री यहाँ रखी है इन्होंने आपके मुँह में।"

सबकी आँखे फ़टी रह गई।
हवेली की तलाशी ली गई और भारी मात्रा में विस्फोटक पाया गया।

''''''''''''''''''''''''''''''

सभी इस वक़्त पुलिस स्टेशन में मौजूद थे।

जासूस महाशय ,इंस्पेक्टर घुड़पकड और कमिशनर साहब के साथ कुकुरमुत्ता भी।

"ओह्ह.."कमिशनर साहब बोले।"तो तुम्ही थे वो नकली ड्रेकुला,जिसने हमारे शहर की शांति भंग कर रखी थी।"
कुकुरमुत्ता कुछ न बोला।
एक्सः– "अब बोलिये भी जनाब।जुबान नही है क्या आपके मुंह में?"
कुकुरमुत्ताः– "मैने तुम्हे कम आँका था जासूस।तुम तो बहुत खतरनाक निकले। मुझे लगा था कि तुम्हारे जरिये मै शहर में इस हवेली की दहशत फैलाने में कामयाब रहूँगा।"

एक्सः– "पोल खोलने वाले भी तो तुम खुद थे।"
सभी एक्स को देखने लगते हैं।
"कैसे?" कुकुरमुत्ता पूछ बैठा।
एक्स(खत निकालकर दिखाते हुए)ः– "ये खत लिखकर तुम्ही ने तो चैलेन्ज किया था ईस महान जासूस को।"
कुकुरमुत्ता(आश्चर्य से)ः– "तुम्हे कैसे पता चला?"
एक्सः– "होटल में जब मैने रूम के लिए रजिस्टर पर साइन किया तब तुम्हारे हस्ताक्षर ठीक नीचे थे। जो मैने पहचान लिये।

खत के नीचे लिखे 'एक आलोचक' से वो हस्ताक्षर हूबहू मिलते थे आपके मुंह में।"

घुड़पकड :– "यानि वहाँ ड्रेकुला नही,ये था और हमे बेवकूफ बना रहा था।अब तो तेरी खैर नहीं।"
कमिशनरः– "लेकिन तुम्हारी सेकेट्री को क्या हुआ था?"
एक्सः– "उसे हुआ कुछ नहीं।बस इन जनाब ने अपनी सम्मोहित करने की कला का प्रदर्शन किया।"

कुकुरमुत्ता :– "तुम्हे देख लूंगा एक्स।"
एक्सः– "एक्स नही,ज़ासूस एक्स।
सब एक साथः– "आपके मुंह में।"
एक्स चौंका।
सब हंस पड़े।

'''''' 'समाप्त' ''''''

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

नई किताब

वो डर की रात फिर आने को है श्श्श........

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

https://ComicsJunction.Stck.Me
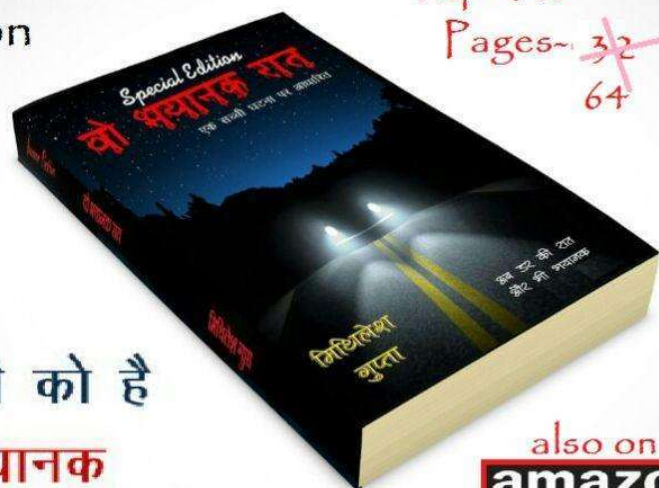
भूतों और प्रेतों के किस्से जाने कितने सच होते हैं ये मैं नही जानता, पर ये घटना उस समय घटी जब मैं बहुत छोटा था और जब बड़ा हुआ इसे एक कहानी मानकर भूल चूका था जो मम्मी ने कई बार बचपन में सुनाई थी, पर बड़े होते–होते उन जगहों की घटनाओ और तथ्यों ने मेरी रोचकता को इस कदर बढा दिया कि जब मैं इसकी तह तक पहुंचा सब किस्से मेरे सामने थे जिसे कोई झुठला ही नहीं सकता।

उसी कहानी के पहलुओ से......

'' उनकी आँखों के सामने जो दृश्य था।

संग्राम सिंह और उसका परिवार उस भयावह नज़ारे के सामने अब एक पल के लिए साँसे थामे खड़ा था।

कार की हेड लाइट्स पर ताजे खून के धब्बे नज़र आ रहे थे।

''ओह माय गॉड !श' गीता के मुँह से निकला।

श्श्ये क्या है..?'' एक पल के चुभते सन्नाने के बाद संग्राम सिंह ने धीमे स्वर में पूछा।

"मैंने तो आप लोगो से पहले ही कहा था कोई न कोई कार से टकराया था वर्ना ये दुर्घटना नहीं होती ...पापा अब तो आपको यकीन हो गया न ये सब देख कर ?" राहुल ने लगभग चिल्लाते हुए कहा।

"हे भगवान् ..." अर्चना चिल्लाई – "मैंने कहा था यहाँ कुछ गलत हो रहा है...कुछ तो गलत ...ये खून के दाग कहाँ से आ गए ? किसके है ये खून के दाग ?" अर्चना ने जोर से संग्राम सिंह के बाजुओ को दबा कर कहा।
"राहुल ! पापा ! ये सब क्या हो रहा है हमारे साथ ?" गीता ने डरे हुए स्वर में कहा– "पापा ! मम्मी ठीक कह रही है। कुछ तो गलत हो रहा है ...अब तो मुझे भी बहुत डर लगने लगा है.''
गीता ने थूक गटकते हुए कहा "मगर ये किसी जानवर का खून भी तो हो सकता है पापा...श्श श्शजानवर ?? अच्छा तो कहाँ गया वो जानवर कार से टकराने के बाद '' राहुल ने कहा।
श्शअरे तुमने उसे देखा ही न हो और वो गाडी के नीचे आ गया हो और जब हम उस पेड़ से टकराए तब तक वो उठकर जंगल में भाग गया हो जख्मी हालत में ही सही." गीता ने अपना अनुमान लगाया।
संग्राम सिंह अब भी खामोश थे। क्यूंकि वो शायद बातों में नहीं सुबूतों में यकीन करने वालों में से थे।
"हो सकता है.. पर फिर सड़क पर कहीं खून गिरना चाहिए था." अर्चना चारों तरफ देखती हुई बोली, "ये कोई मायाजाल लगता है 'जी'. मुझे बहुत डर लग रहा है ये कोई काला जादू हो सकता है। कहते हैं कि अमावास की रात बड़ी जालिम होती है और काली और बुरी आत्माएं लोगो को ऐसे ही अपने जाल में फसांती हैं."
अर्चना के बातों ने राहुल और गीता को भी यकीन दिलवाना शुरू कर दिया था कि ये सब किसी कारण से उनके साथ घट रहा है।
जंगल के बीचो – बीच खड़े चारो तरफ के घने और भयावह जंगल का नज़ारा अर्चना की बातों को सच बनाये जा रहा था। ''

(वो भयानक रात Second Special Edition)

लेखक– मिथिलेश गुप्ता

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

हमारे नायकों के प्रेरणा स्रोत - 2
राम प्रसाद बिस्मिल एवं अशफ़ाक़ उल्ला खाँ

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

अंकित मनीष

https://ComicsJunction.Stck.Me

दोस्तों पहले अंक में आपने पढा भारतीय महानायक चंद्र शेखर आजाद के बारे में तथा उनके जीवन से प्रेरित कॉमिक नायक डोगा के बारे में। हमने जाना कि कैसे दोनों ने भारतीय समाज और देश की भलाई के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। इस बार भी हम ऐसे ही कुछ और महानायकों की कहानी के बारे में बात करेंगे, और जानेंगे उनसे प्रेरणा लेकर आगे बढ़ते हमारे सुपरहीरोज़ के बारे में।

दोस्ती, सिर्फ एक शब्द, एक सम्बन्ध या एक एहसास नहीं है। ये कोई वजह भी नहीं है किसी के साथ खड़े रहने की। ये एक शक्ति है एक दूसरे के लिए जीने की, एक जिम्मेदारी है दूसरे को हमेशा सही करने के लिए मजबूर करने की। ये ना समाज के तंग दायरों में बंधती है ना ही धर्म की दीवारों से रुकती है। आज हम जिनकी बात करेंगे उन्होंने अपने जीवन से इस शब्द को एक अलग ही सार्थकता प्रदान की है। उनकी दोस्ती कितनी प्रगाढ़ है इसका अंदाज़ा सिर्फ इस बात से लगाया जा सकता है कि इतिहास हमेशा उनका नाम साथ में लेता है और गर्व से लेता है। उनके नाम हैं राम प्रसाद बिस्मिल तथा अशफ़ाक़ उल्ला खान। इनकी मित्रता भारत में हिन्दू मुस्लिम एकता की ध्वज वाहक है और इन्ही के समान हमारे कॉमिक्स जगत में ऐसी कौमी एकता के प्रतीक हैं राम–रहीम। मनोज पॉकेट बुक्स के ये सुपर हीरोज़ एक समय अपनी सफलता की पराकाष्ठा पर थे, उस समय ये देश के सबसे अधिक लोकप्रिय पात्र थे किन्तु गुज़रते वक़्त और अन्य नायकों के उदय के साथ इनकी चमक कुछ फीकी पड़ गयी, ठीक उसी प्रकार देश की क्रांति में भी एक वक़्त बिस्मिल जी और अशफ़ाक़ जी लोकप्रियता के शिखर पर थे, किन्तु बाद के वर्षों में हमने उन्हें भुला दिया।

भिन्न धर्मों का प्रतिनिधित्व करने वाले इन महानायकों का जन्म उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर जिले में हुआ था। एक ही जिले में होने के बावजूद इनकी मुलाक़ात काफी समय बाद हुई, अशफ़ाक़ जी के बड़े भाई रियासत उल्ला बिस्मिल जी के सहपाठी थे और उन्होंने ही इनकी मुलाक़ात करवाई। इन दोनों ने ही अपनी मित्रता और देश के प्रति अपने कर्तव्यों के मध्य अपने धर्म को नहीं आने दिया, एक किस्सा याद आता है जिसका ज़िक्र बिस्मिल जी ने अपनी आत्मकथा में भी किया है, एक बार बिस्मिल जी ने अशफ़ाक़ जी को मिलने के लिए आर्य समाज मंदिर में बुलाया और घरवालों के लाख मना करने के बाद भी अशफ़ाक़ जी उनसे मिलने गए। राम–रहीम ने भी इन्ही आदर्शों को आत्मसात कर रखा है। विभिन्न कॉमिक्स में हम पाते हैं कि रहीम कभी भी मंदिरों में जाने में किसी प्रकार की हिचक नहीं रखता। दोनों का ही जीवन अशफाक जी और बिस्मिल जी के जीवन की परछाई है। राम जहाँ बिस्मिल जी की तरह ही विद्वान और समझ बूझ से काम लेने वाला है वहीं अशफाक जी से प्रेरित रहीम गुस्से और ताकत का सहारा लेता है। बिस्मिल जी और अशफ़ाक़ जी की तरह ही राम रहीम में भी देश भक्ति का जज्बा कूट कूट कर भरा हुआ है। दोनों ही देश के लिए

अपना सब कुछ न्योछावर करने को तैयार हैं। जिस तरह हमारे दोनो क्रांतिकारी नायकों ने अपने समय में अंग्रेजों से हर सम्भव संघर्ष किया वैसे ही राम रहीम भी अपनी क्षमता से बढ़ कर संघर्ष करते हैं।

हमारी आजादी की लड़ाई कितनी ही कठिन परिस्थितियों में लड़ी गई। धनाभाव, उन्नत हथियारों की कमी, अंग्रेजों के चाटुकार देशद्रोही जो अपने ही साथियों को धोखा देते थे, दोनों ने ही इन सब का सामना निडरता से किया। राम रहीम भी इन मुश्किलो से दो चार होते हैं, कुछ पैसों के लिए देश को धोखा देने वाले लोग, मुश्किल दुश्मन तथा खतरनाक मिशन पर जाकर मुश्किल से मुश्किल परिस्थितियों में दुश्मन के नापाक इरादों को नाकाम करना ही इनका काम है। जिस तरह अशफ़ाक़ जी और बिस्मिल जी को जेल जाना पड़ा और वहां अंग्रेजों के अत्याचार सहने पड़े वैसे ही राम रहीम को भी यह मुश्किल झेलनी पड़ी है कई बार मुश्किल मिशन पर दुश्मन के द्वारा पकड़े जाने पर उनको भी टॉर्चर झेलना पड़ा पर दोनों हर मुश्किल परिस्थिति से बच कर निकल जाते हैं। अफसोस वास्तविक दुनिया के इन दो नायकों को बचने का अवसर नही मिला। मिलता भी कैसे जब देश के दुश्मन ही देश पर राज कर रहे थे। बिस्मिल जी के ही शब्दों में–

इलाही ख़ैर वो हरदम नई बेदाद करते हैं,
हमें तोहमत लगाते हैं जो हम फरियाद करते हैं ।
ये कह कहकर बसर की उम्र हमने क़ैदे उल्फत में,
वो अब आज़ाद करते हैं वो अब आज़ाद करते हैं ।।

19 दिसम्बर 1927 को वो अशुभ बेला आई जब बिस्मिल जी को गोरखपुर की जेल और अशफ़ाक़ जी को फैज़ाबाद की जेल में फाँसी पर लटका दिया गया।

जैसे इन दो महानायकों ने अपना पराया सबकुछ देश के लिए त्याग दिया वैसे ही राम रहीम भी देश के लिए सारे रिश्ते नाते खत्म कर सकते हैं, एक कॉमिक में इसका संदर्भ है– जब राम के पिता कर्नल राघव के भेष में एक जासूस देश की गुप्त सूचना दूसरे देश को भेजता है तो राम अपने पिता को भी दुश्मन मान कर उनको सजा देने को तत्पर हो जाता है। इससे बड़ी देशभक्ति की मिसाल क्या होगी कि एक पुत्र अपने देश के लिए एक पिता के विरुद्ध ही खड़ा हो जाए।

अटूट मित्रता की भी एक बड़ी मिसाल है ये दोनो। एक संदर्भ मुझे याद आता है जब अशफाक जी जेल में थे तो एक दिन सी०आई०डी० के पुलिस कप्तान खानबहादुर तसद्दुक हुसैन जेल जाकर अशफ़ाक़ जी से मिले और उन्हें फाँसी की सजा से बचने के लिये सरकारी गवाह बनने की सलाह दी। जब अशफ़ाक़ जी ने उनकी सलाह को तवज्जो नहीं दी तो उन्होंने एकान्त में जाकर अशफ़ाक़ जी को समझाया–

"देखो अशफ़ाक़ भाई! तुम भी मुस्लिम हो और अल्लाह के फजल से मैं भी एक मुस्लिम हूँ इस वास्ते तुम्हें आगाह कर रहा हूँ। ये राम प्रसाद बिस्मिल वगैरा सारे लोग हिन्दू हैं। ये यहाँ हिन्दू सल्तनत कायम करना चाहते हैं। तुम कहाँ इन काफिरों के चक्कर में आकर अपनी जिन्दगी जाया करने की जिद पर तुले हुए हो। मैं तुम्हें आखिरी बार समझाता हूँ, मियाँ! मान जाओ; फायदे में रहोगे।"

इतना सुनते ही अशफ़ाक़ जी की त्योरियाँ चढ गयीं और वे गुस्से में बोले–

"खबरदार! ज़ुबान सम्हाल कर बात कीजिये। पण्डित जी (राम प्रसाद बिस्मिल) को आपसे ज्यादा

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

मैं जानता हूँ। उनका मकसद यह बिल्कुल नहीं है। और अगर हो भी तो हिन्दू राज्य तुम्हारे इस अंग्रेजी राज्य से बेहतर ही होगा। आपने उन्हें काफिर कहा इसके लिये मैं आपसे यही दरख्वास्त करूँगा कि मेहरबानी करके आप अभी इसी वक्त यहाँ से तशरीफ ले जायें वरना मेरे ऊपर दफा ३०२ (कत्ल) का एक केस और कायम हो जायेगा।"

इतना सुनते ही बेचारे कप्तान साहब (तसद्दुक हुसैन) की सिट्टी–पिट्टी गुम हो गयी और वे अपना सा मुँह लेकर वहाँ से चुपचाप खिसक लिये। राम रहीम की मित्रता भी कुछ ऐसी ही है, जिसमें कई बार दोनों को एक दूसरे के खिलाफ भड़काने के प्रयास किये जाते हैं। एक कॉमिक में एक वृतांत है जब एक भूत रहीम के शरीर पर कब्जा कर लेता है और राम को मारने का प्रयास करता है, तब राम अपनी जान खतरे में होते हुए भी रहीम पर प्रहार नही करता क्योंकि उसके द्वारा की गई चोट का सीधा असर रहीम पर ही होता। एक असली मित्र का स्वाभाविक गुण है कि वो अपने मित्र को गलत मार्ग पर जाने से पहले आगाह करे लेकिन यदि फिर भी वो ना सुने तो ये जानते हुए भी कि राह गलत है वो अपने मित्र का साथ दे, ऐसी एक घटना इनके जीवन में भी है जब अशफ़ाक़ जी ने बिस्मिल जी को काकोरी काण्ड के पूर्व रोकने का प्रयास किया था, उनका मानना था कि इस कदम से अंग्रेज हाथ धोकर उनके पीछे पड़ जाएंगे और एच•आर•ए• (हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन) शुरू हो पाने से पहले ही समाप्त कर दी जाएगी, किन्तु जब बिस्मिल जी नहीं माने तो वो भी उनके साथ इस लूट में शामिल रहे। इसी प्रकार कई कॉमिक्स में देखने को मिलता है कि रहीम उत्तेजित हो कर किसी कार्य में जल्दबाजी कर समस्या खड़ी कर लेता है किन्तु राम सदैव ही उसके साथ खड़ा होता है और उस मुसीबत का डट कर सामना करता है। जिस तरह बिस्मिल जी और अशफ़ाक़ जी दूसरों की जान बचाने को हमेशा तत्पर थे वैसे ही ये दोनों भी इंसान की जान को बहुत महत्व देते हैं।

स्वतंत्रता के बाद हमारे इन नायकों को लोग भूलते जा रहे हैं, चौराहों पर इनकी मूर्तियां तो जरूर है पर उन मूर्तियो पर फूल चढ़ाने वाले नही हैं, न ही उनको पहचानने वाले ही रह गए। धीरे धीरे इतिहास के पन्नों में ये नायक गुम हो रहे हैं। राम रहीम के साथ भी यही हो रहा है प्रकाशन बन्द होने के बाद इनका चरित्र भुलाया सा जा रहा है न तो इनकी कॉमिक बच्चों को प्रेरित करने के लिए उपलब्ध है न कोई अब इनकी बात करता है। जिन कहानियो को पढ़ कर लोगो में देशभक्ति का जज्बा आता था वो कहानियां खत्म सी हो रही हैं। पता नहीं ये उनकी दूरदर्शिता थी या तत्कालीन समाज को देखते हुए भावी पीढ़ी का आंकलन कि अशफ़ाक़ जी ने मृत्यु से पूर्व ये लिखा था –

जुबाने–हाल से अशफ़ाक़ की तुर्बत ये कहती है,
मुहिब्बाने–वतन ने क्यों हमें दिल से भुलाया है?
बहुत अफसोस होता है, बड़ी तकलीफ होती है,
शहीद अशफ़ाक़ की तुर्बत है और धूपों का साया है!!

ऐसे नायकों का वर्णन लिखने वाले की उम्र समाप्त हो सकती है किन्तु इनका वर्णन समाप्त नहीं होगा इसलिए बिस्मिल जी की पंक्तियों के साथ इति के स्थान पर एक नया आरम्भ लिख रहा हूँ :

बला से हमको लटकाए अगर सरकार फांसी से,
लटकते आए अक्सर पैकरे–ईसार फांसी से।

लबे–दम भी न खोली ज़ालिमों ने हथकड़ी मेरी,
तमन्ना थी कि करता मैं लिपटकर प्यार फांसी से।

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

खुली है मुझको लेने के लिए आग़ोशे आज़ादी,
खुशी है, हो गया महबूब का दीदार फांसी से।

कभी ओ बेख़बर तहरीक–ए–आज़ादी भी रुकती है?
बढ़ा करती है उसकी तेज़ी–ए–रफ़्तार फांसी से।

यहां तक सरफ़रोशाने–वतन बढ़ जाएंगे क़ातिल,
कि लटकाने पड़ेंगे नित मुझे दो–चार फांसी से।।

नोट– हमें गर्व है कि हमारा ये अंक दिसंबर को प्रकाशित हो रहा है इसलिए समस्त ब्व्ह परिवार नतमस्तक होकर देश के इन दो वीर सपूतों, जिनका शहादत दिवस 19 दिसंबर है , को अपने इस तुच्छ प्रयास से श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

https://ComicsJunction.Stck.Me

कातिलाना इश्क

जासूसी कथा
ऋषभ आदर्श

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

बंगाल में एक प्रसिद्ध जासूस हैं अभिराज दासगुप्ता। **Mid aged** हैं, आधे चाँद वाले! उनके अनुसार जो क्रिमिनल्स होते हैं वो बड़े क्रिएटिव होते हैं **in fact** सबसे। तमाम प्लानिंग प्लॉटिंग कर के जुर्म करना और ऊपर से खुद को बचाने की भी प्लानिंग...बाप रे ये भी एक कला ही है। उनका एक असिस्टेंट है ब्रह्मा पटेल। दोनों ने मिल के कई केस सुलझाये हैं और अखबार की सुर्ख़ियों में भी आये हैं!

आज उनके हाथ एक दुर्गापुर का केस आया है, वो जब क्राइम सीन में पहुंचे तो पुलिस अफसरान उस घर की घेराबन्दी कर रहे थे। वहाँ एक लड़की की लाश थी, बामुश्किल 16 से 18 साल की लड़की, रिया बिस्वास। उसकी माँ अब तक सदमे में थी और बाप बगल में ही चीख चीख कर रो रहा था। दासगुप्ता जी ने अपनी पैनी निगाहें चारो ओर दौड़ायीं और ब्रह्मा से सबूत और सुराग जमा करने को बोला।

अभिराज– माफ़ करियेगा लेकिन कुछ सवाल करने बहुत जरुरी हैं।

“मैं समझता हूँ; **please** उस कमीने को ढूंढिए जिसने मेरी बेटी का ये हाल किया है” मिस्टर बिस्वास ने सिसकियाँ लेते हुए कहा।

अभिराज– मुझे सही **sequence** से बताइये की हुआ क्या?

बिस्वास – कल रात रिया **night out** के लिए अपने दोस्तों के साथ गयी। मैंने उसे मिशिका के घर **drop** किया था...यही कोई 8 बजे रात को। फिर सोने से पहले तकरीबन साढ़े दस बजे उसे कॉल किया, उसने फोन उठाया भी और अच्छे से बात की, किसी परेशानी का ज़िक्र तक नहीं किया...सुबह मैंने अपनी पत्नी की चीख सुनी और भागा भागा ड्राइंग रूम पहुंचा,, औ..औ..और देखा तो मेरी बेटी खून में लतपथ पड़ी थी!! उसके गले से खून बाह रहा था और ये चाकू यहीं उसके बगल में पड़ा था (आवाज़ आंसुओं में डूबने लगी)

अभिराज– आपने किसी चीज़ को हाथ लगाया?

Mr- Biswas – नहीं हमें तो पुलिस को इन्फॉर्म करने की भी सुध नहीं थी...वो भी पड़ोसियों ने किया।

अभिराज– **okay**, आपके और भी बच्चे हैं?

Mr- Biswas – No she is.........was our only daughter

अभिराज– वो अंदर कैसे आई, आपमें से किसी ने दरवाज़ा खोला था?

Mr- Biswas (सुबकते हुए)–नही, उसके पास एक्स्ट्रा चाभी थी..शायद उससे ही...

https://ComicsJunction.Stck.Me

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

अभिराज –आप जब यहाँ आये तब, main door खुला था?

Mr- Biswas – नही, ये तो भीतर से बन्द था...खिड़की तक नहीं खुली थी! मुझको अच्छे से याद है, मैंने ही पड़ोसियों के लिए दरवाज़ा खोला था!

अभिराज –do you doubt anyone?

Mr- Biswas (सिसकते हुए) – नही, न ही ऐसा कुछ रिया ने कभी बताया।

'अभिराज– शायद उसे कोई परेशानी रही हो! उम्म्म..मुझे मिशिका का एड्रेस मिल सकता है?

Mr- Biswas – sure, मैं आपको लिए चलता हूँ।

इस बीच ब्रह्मा ने ब्लड सैम्पल, फिंगरप्रिंट्स और बाकी जरूरी सुराग इकट्ठे कर लिए, जब वे मिशिका के घर जाने को थे अभिराज को सोफे के नीचे से कुछ मिला!! एक कान की बाली, जिसे उठा कर उसने सबूतों के बैग में रख लिया।

अभिराज– ये किसका है? Riya or her mother?

Mr- Biswas (चौंकते हुए)– किसी का नहीं

अभिराज– हम्म्म... Let's go to Mishaka's place

"मिशिका के घर"

अभिराज– मिशिका, please cooperate and tell us the truth कल रात हुआ क्या?

मिशिका– but sir......- Uncle ये हैं कौन(Mr- Biswas से) क्या हुआ?

अभिराज– I m a detective (उसने अपनी id दिखाई). तुम्हारी दोस्त रिया का क़त्ल हो गया है?

मिशिका (shocked) – WHAT?

मिशिका (रोते हुए) – पर ऐसा कैसे हो सकता है,..... कल रात ही तो हम मिले थे?

अभिराज– first of all tell me, ये earring तुम्हारी है?

मिशिका - नही ये मेरी नहीं है... और मुझे नहीं पता ये है किसकी .

अभिराज –हम्म...कल रात जो भी हुआ सब बताओ!

मिशिका– last night when Riya's dad dropped her to my place, हम पार्टी कर रहे थे, रिया अपने boyfriend राकेश के साथ enjoy कर रही थी....

अभिराज–फिर?

Mr- Biswas (बीच में रोकते हुए) – What...... पर उसने तो कभी कुछ नहीं बताया इस बारे में...!!

मिशिका– but uncle.........

https://ComicsJunction.Stck.Me

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

अभिराज– मिशिका this is not important right now tell me फिर क्या हुआ?

मिशिका– फिर करीब 10 बजे दोनों terrace पे चले गए... उसके बाद दोनों में से किसी को मैंने नहीं देखा।

अभिराज– तुम राकेश का एड्रेस दे सकती हो?

मिशिका– yeah, it's Mansarovar apartment, Durgapur- flat A38

अभिराज– let's go ब्रह्मा!

ब्रह्मा – okay you leave
मैं लैब से रिपोर्ट लेने जा रहा हूँ; देखते हैं क्या कुछ मिलता है।

अभिराज– Mr- Biswas आपको घर जाना चाहिए; आपकी पत्नी को आपकी ज़रूरत है।

Mansarovar apartment, Durgapur- flat A38

अभिराज - So Rakesh, कल रात के घटनाक्रम बताओ!

राकेश (हड़बड़ाए स्वर में)– Nothing sir I was just chilling out with my friends- What happened sir?

अभिराज– हमें रिया के घर से उसकी लाश मिली है!!

राकेश - but...but how is this possible!

अभिराज– वही तो पता करना है. ..now tell me तुम दोनों पार्टी के बीच से छत पे गए फिर क्या हुआ?

राकेश–– क्..कुछ ख़ास नहीं सर बस मैंने उसे कान की बालियां gift की...

अभिराज– sorry to interrupt you, पर (कान की बाली दिखाते हुए) क्या ये उनमे से एक है?

राकेश (रोते हुए) – ह्..ह् हाँ सर!

अभिराज– मुझे ये उसके घर से मिली...फिर क्या हुआ?

राकेश– कुछ नहीं सर, उसे कुछ ठीक नहीं लग रहा था, तो मैंने उसे घर drop कर दिया!

अभिराज– तुम्हे time याद है?

राकेश– yes sir it was 1:06 क्योंकि उसी समय मैंने अपनी माँ से बात की थी!

अभिराज– ok thank you Rakesh

राकेश – sir मैं आपको कुछ बताऊँ?

अभिराज– what?

तंमी– सर कोई चीज़ थी जिससे रिया परेशान थी। उसके पेरेंट्स उसके विषयों के चुनाव से खुश नहीं थे, उसपे दबाव बना रहे थे

https://ComicsJunction.Stck.Me

की वो कॉमर्स छोड़ कर साइंस ले ले।।

अभिराज – thanks Rakesh this will help a lot.

अगले कुछ दिनों तक रिया के पड़ोस के लोगों से पूछताछ करने पर अभिराज कोपता चला की पड़ोसी अक्सर उनके घर से चीखने चिल्लाने की आवाज़ सुनते थे। अक्सर झगड़ा होता था...रिया के दोस्तों ने भी ये बात स्वीकार की, कि रिया ने उनको भी ये बात बताई थी!

लैब से रिपोर्ट आ चुकी थी।

ब्रह्मा– दासगुप्ता, मर्डर स्थल से जो चाकू मिला, उसमे रिया और उसके माता पिता दोनों के निशान हैं। पोस्टमोर्टम रिपोर्ट्स से पता चला कि उस रात रिया ने शराब पी रखी थी और time of murder यही कोई 1:30 से 2 बजे के बीच। और हाँ जो खून के धब्बे मिले वो सिर्फ रिया के ही थे; पर उसके शरीर में हाथापाई के कोई निशान नहीं मिले और जो वारदात की जगह से बाल मिले थे वो भी रिया के ही थे।

अभिराज – Hmmmmm ... और दरवाज़े खिड़कियां अंदर से बन्द थे तो forced entry का भी सवाल नहीं

ब्रह्मा – सारे सबूत माँ बाप की तरफ इशारा कर रहे हैं; हॉनर किलिंग का एक और केस तो नहीं??

अभिराज– हो सकता है पटेल साहब! एक काम करो रिया के घर जाओ और थोड़ी पूछताछ और करो; मैं वहीँ शाम को मिलता हूँ...उन्हें कहीं जाने मत देना।।

"शाम को रिया के घर"

राकेश– हम यहाँ क्यों हैं सर?

मिशिका – yes sir please tell us

अभिराज– मै बस उस रात की कहानी फिर से सुनना चाहता हूँ आपकी ज़ुबानी!

राकेश (चिढ कर) – कितनी बार एक ही बात बतानी होगी सर?

अभिराज – नही राकेश इस बार मैं सच्ची कहानी सुनना चाहता हूँ!!

राकेश– मै...मैंने तो सच ही कहा था सर!!

अभिराज– अच्छा फिर मैं ही जहमत करता हूँ बताने की, कि उस रात सच में क्या हुआ! तुमने रिया को 1 बज कर 6 मिनट में घर छोड़ा, फिर अपनी माँ से बात की लेकिन तुम गए नहीं!! बल्कि तुमने रिया का पीछा किया और उसके घर में दाखिल हो गये...

राकेश (बीच में टोकते हुए)– What! why would I do that?

अभिराज– टोको मत राकेश, सुनो...तुमने उसका पीछा किया, उसने तुम्हे आते हज देखा मगर कुछ बोली नहीं क्योंकि वो नशे में धुत थी...वो चीख भी नहीं पायी; तुमने इस डाइनिंग टेबल से चाकू उठाया, रुमाल के ज़रिये...रिया को पीछे से दबोचा, गला रेता और निकल गए...

राकेश(पसीने से तर) – पर...द दरवाज़ा तो अंदर से बन्द था... फिर आप कैसे कह सकते हैं की

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

https://ComicsJunction.Stck.Me

मैं घुसा और बाहर भी भाग गया!!

अभिराज– मैंने अभी खत्म नहीं किया...तुमने रिया के बालों से एक क्लिप निकाला उसे हुक की शक्ल में मोड़ा...और रिया के ही एक लम्बे बाल में फंसा के बाहर से दरवाज़े को लॉक कर दिया! और बाल सहित क्लिप बाहर खींच ली...**carefully**...और तुमने शायद जूते तक उतार लिए थे, है न? ताकि कुछ पीछे न रह जाए। सुबह जब **Mr Biswas** ने दरवाज़ा खोला बचे खुचे बाल के टुकड़े टूट कर गिर गए...बोलो राकेश अब चुप रह के फायदा नहीं...पुलिस बाहर है!!

राकेश (रोते हुए) –हाँ मैंने मारा उसे...**I loved her** और वो कमीनी मुझसे ब्रेक अप कर के सजल के साथ जाना चाहती थी.. .रोज मुझसे झगड़ती और उस.. उस हरामजादे सजल के साथ घूमती। मुझे जलाती, इसलिए मैंने ये प्लानिंग की;मुझे उसके और उसके घरवालों के झगड़े का पता था, मुझे लगा सारा इल्जाम उनके ऊपर जाएगा पर....(सुबुक सुबक)

रिया के माता पिता रो रहे थे, अपनी बेटी के साथ मनमुटाव का इतना बड़ा नुकसान उन्होंने सोचा भी नहीं था! मिशिका शॉक में थी. ..उसने अपने दो करीबी दोस्तों को खो दिया था...राकेश को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

“ऑफिस में”

ब्रह्मा – मगर तुमने कैसे **I mean how?**

अभिराज (मुस्कुराते हुए)– मुझे पता था तुम ये पूछोगे...हाहाहा... तुम्हे रिया के यहाँ जाने को कह कर मैं मिशिका के पास गया... वहां पार्टी की फ़ोटोज़ देखीं! उसमे मैंने देखा की रिया ने 2 क्लिप्स लगा कर बाल बान्धे थे... और उसकी लाश के बाल खुल कर बिखरे हुए थे।

Then suddenly it stroke me, जब मैं राकेश के यहाँ गया था तो उसके टेबल पर ढेर सारे क्लिप्स थे..उनमे से दो की आकृति टेढ़ी थी, बिलकुल हुक की तरह...बस मैंने अंदाज़ा लगाया और वो सही भी निकला।।

अगर उसके पेरेंट्स ने क़त्ल किया होता तो कभी भी मर्डर वेपन ज़मीन पे नहीं छोड़ते..मुझे चाकू का मौका–ए–वारदात पे होना शुरू से खटक रहा था। फिर मिशिका से पूछने पर रिया और राकेश के सम्बंधों में खटास की बात भी पता चल गयी। मैं राकेश को लेकर रिया के घर पहुँच गया और अपनी कहानी बताई...**and voila** उसने कुबूल भी कर लिया...कोई शातिर अपराधी तो था नहीं वो..अब पुलिस बाकी सुबूत जुटा ही लेगी। (अभिराज ने आँख मारी)

ब्रह्मा– **Salute man, One more case solved**

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

किड्स कॉर्नर

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

चित्र – आशू राजावत

संवाद – अभिषेक राजावत

प्यारे दोस्तों

सबसे पहले तो आप सभी को क्रिसमस और नव वर्ष की की ढेर सारी बधाइयाँ देना चाहूँगा। हालांकि जब यह पेज आप पढ़ रहे होंगे तब तक क्रिसमस बीत चुका होगा पर किसी भी तोहफे का असली मजा तो त्यौहार के बाद ही आता है जब हम उसे प्रयोग करते हैं। ठीक इसी तरह हम भी चाहते थे कि आप वर्ष 2016 के अंतिम कुछ दिवस हमारे साथ बिताएं।

इस बार का विषय था भूत प्रेत और रहस्य रोमांच। इससे पहले कि आप लोग रिव्यु में पूछें मैं खुद बता देता हूँ यह विषय चुनने का भी एक कारण है। कारण काफी सीधा सा है चूंकि यह ठण्ड का मौसम है तो हम इस मौसम का खाली समय रजाई में बिताते हैं। इस ठण्ड के मौसम में रजाई चाय की चुस्की के साथ कुछ
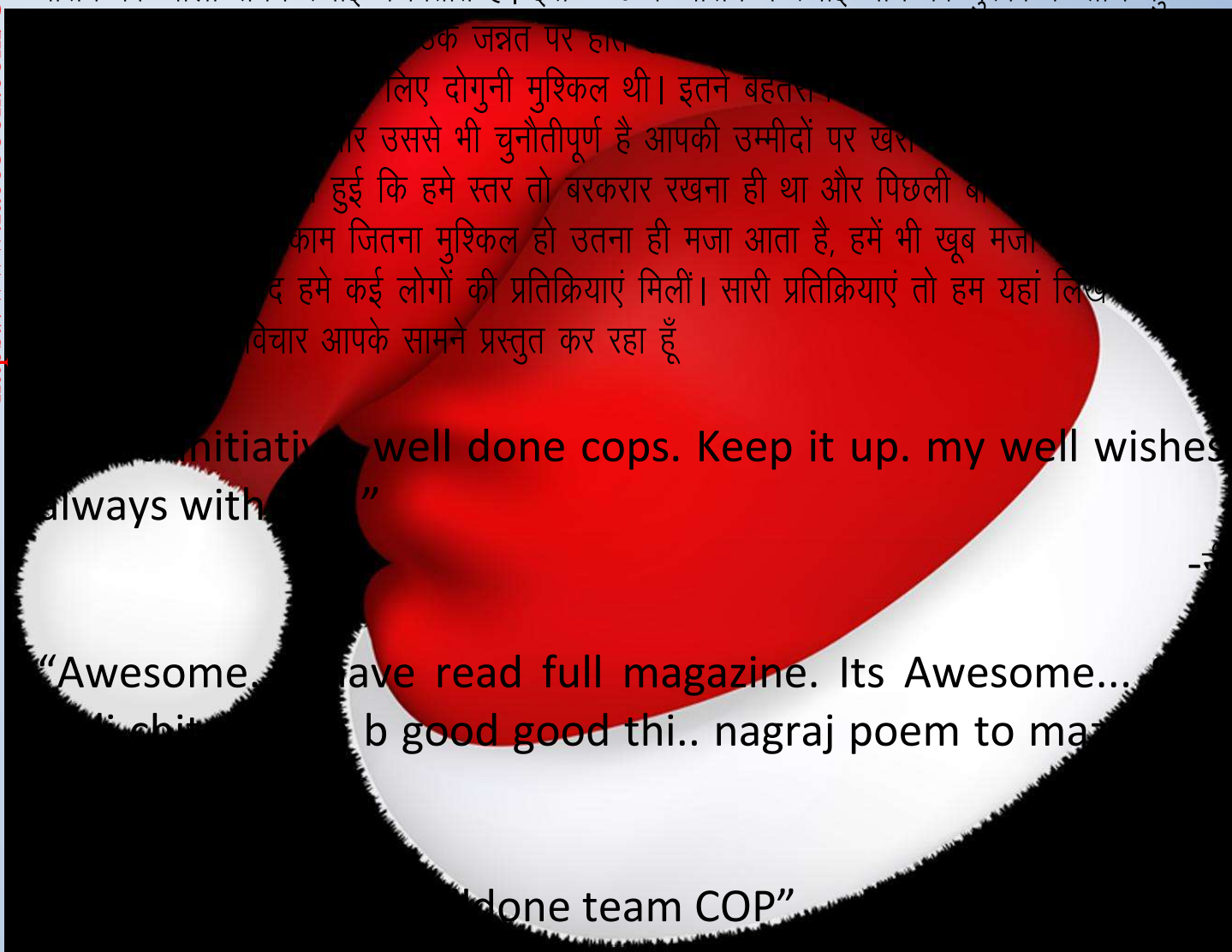
-राजेश सिंह

अनिक दिसंबर को संभव बनाने के लिए मैं अपनी रचनाकार टीम को एक बार फिर से धन्यवाद दूंगा और सम्पादक महोदय श्री अभिराज जी का भी जिन्होंने सभी चीजों को काफी प्रोफेशनल तरीके से किया। आपका ज्यादा समय ना लेते हुए मैं आपको अनिक टीम से मिलवाना चाहता हूँ।

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS
https://ComicsJunction.Stck.Me

उम्मीद है आपको भी हमारे धुरंधर रचनाकारों से मिलकर काफी अच्छा लगा होगा। आने वाले अंको में हम हर रचनाकार के बारे में विस्तार पूर्वक बताएँगे। अब बात चल ही निकली है तो आपको आने वाले अंक के विषय में थोड़ी जानकारी दे देता हूँ।

अगले महीने हम देश का 68वां गणतंत्र दिवस मनाने जा रहे हैं तो अनिक भी देश को ही समर्पित होगी यानी अगला अंक देशभक्ति विशेषांक होगा। इस अंक में आपको क्या मिलेगा ये तो सरप्राइज है। तब तक आप इस अंक का लुफ्त उठाइये और रिव्यु देना ना भूलें।

किसी भी सुझाव या विचार के लिए comicsourpassion@gmail.com पर मेल करें

धन्यवाद

आपका – निशांत मौर्य

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

https://ComicsJunction.Stck.Me